

# चकमक

## बाल विज्ञान पत्रिका

### नन्हा झाड़

रामकरन  
चित्र: शुभांगी चेतन

बोला नन्हा झाड़ एक दिन  
अपने अब्बू झाड़ से।  
कैसे बात करें हम इस  
ऊँचे-लम्बे ताड़ से।  
न जाने किस चाहत में  
हो गया इतना बड़ा।  
हम झाड़ों को देखते ही  
रहता है बस खड़ा।

मूल्य ₹50



# विशेषांक नवम्बर-दिसम्बर 2024

तुम जानते ही हो कि चकमक का नवम्बर अंक विशेषांक होता है। यह नवम्बर-दिसम्बर का संयुक्त अंक भी है। इसलिए इसमें तुम्हारी रचनाओं के लिए बहुत सारे पन्ने होंगे। तो इस अंक के लिए खास तौर से अपनी रचनाएँ हमें भेजना।

इस विशेषांक के लिए किस्से-कहानियों, कविताओं या चित्र अथवा कॉमिक के रूप में तुम्हारी रचनाओं के लिए कुछ विषय ये रहे:

- कहानी पूरी करो (पेज नम्बर 24 देखो)।
- अपने घर-परिवार या आसपास के बड़े-बुजुर्गों से अपने इलाके के इतिहास के बारे में मालूम करना।
- हाल ही में सुना कोई ऐसा समाचार जो तुम्हें बहुत ज़रूरी लगता है और उसे सुनकर तुम्हें कैसा महसूस हुआ।
- किसी ऐसे भोजन/पकवान की रेसिपी (फोटो सहित) जो बाज़ार में रेस्त्रां/होटल में नहीं मिलते।
- अपने आसपास आसानी-से उपलब्ध चीज़ों जैसे रसोई की चीज़ों, कबाड़, घास-पत्तियों, डण्डियों-फूलों, कपड़ों की कतरनों आदि से बनाई जा सकने वाली चीज़ों को बनाने की विधि।
- खेल से जुड़ा कोई भी किस्सा।

इनके अलावा खुद की रची कहानी-कविताएँ, किस्से, लेख, चित्र, चुटकुले, पेंटिंग, कॉमिक और क्यों-क्यों के जवाब के साथ-साथ तुम माथापच्ची, चित्रपहेली, तुम भी बनाओ, अन्तर ढूँढो, तुम भी जानो, पुस्तक समीक्षा, फिल्म चर्चा और भूलभुलैया के लिए भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हो। रचनाएँ भेजने की अन्तिम तारीख है – **5 अक्टूबर**।

चित्र की फोटो खींचते वक्त इन बातों का ध्यान रखें -

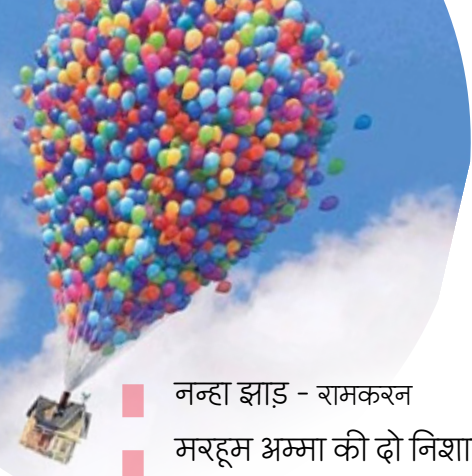
- फोटो खींचने के लिए चित्र को ऐसी जगह पर रखें जहाँ अच्छी रोशनी हो। कैमरे की सेटिंग में पिक्चर क्वालिटी हाई रेज़ोलुशन पर रखें।
- फ्रेम में चित्र के सभी कोने सीधे दिखाई दे रहे हों। चित्र किसी भी कोने से कटा ना हो।
- चित्र को व्हाट्सएप में डॉक्यूमेंट की तरह अटैच करके भेजें।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना पूरा पता ज़रूर लिखना।

रचनाएँ तुम 9753011077 पर व्हाट्सएप कर सकते हो या फिर [merapanna.chakmak@eklavya.in](mailto:merapanna.chakmak@eklavya.in) पर ईमेल कर सकते हो।







अंक 456 • सितम्बर 2024

# चकमक

## इस बार

■ नन्हा झाड़ - रामकरण	1
■ मरहूम अम्मा की दो निशानियाँ - सबा खान	4
■ एक विद्रोह ऐसा भी... - दक्कन रैयतों का...	
■ - सी एन सुब्रह्मण्यम्	7
■ क्यो-क्यो	10
■ क्यो-क्यो - हमारा जवाब - किशोर पंवार	14
■ फिल्म चर्चा - अप - निधि गुलाटी	16
■ अरशद की कचौड़ियाँ - सुशील शुक्ल	20
■ बरस रहा है... - शशि सबलोक	22
■ कहानी पूरी करो	24
■ अन्तर ढूँढो	25
■ मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 5	
■ - आर एस रेशू राज, ए पी माधवन व साथी	26
■ माथापच्ची	28
■ बारिस की बात - सीमा	30
■ पॉपकॉर्न की खोज कैसे हुई?	32
■ चित्रपहेली	34
■ मेरा पत्रा	36
■ तुम भी जानो	43
■ भूलभुलैया	44



चित्र: प्रोइति रॉय

आवरण चित्र: शुभांगी चेतन

### सम्पादक

विनता विश्वनाथन

### सह सम्पादक

कविता तिवारी

### विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी  
उमा सुधीर

### डिजाइन

कनक शशि

### सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्  
शशि सबलोक

### वितरण

ज्ञानक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

### सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

### एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।









# मरहूम अम्मा की दो निशानियाँ

सबा खान

चित्र: प्रोइति रॉय

बचपन में कई दफा अब्बा के मुँह से सुना था कि जमील ने अच्छा नहीं किया। जब मैंने जमील से यह सलाह ली कि घर किस तरह से बनाया जाए और कहाँ से बनाना शुरू किया जाए तो जमील ने सारे पेड़ कटवाकर पहले ज़मीन को एकजाही करवाया। फिर नफ़्तियाँ शुरू करवाई और छोटा-सा घर बनाने की ज़िम्मेदारी ले ली।

2800 स्क्वायर फीट की उस ज़मीन पर 28 पेड़ लगे थे— ऐसा भी बहुत दफा अब्बा बताते हैं। अम्मी भी एक दीवार दिखाते हुए अक्सर कहती हैं, “यहाँ लगे मोगरे के पौधे से आपकी दादी बहुत मुहब्बत करती थीं। वो यहाँ से फूल तोड़कर उनसे गजरा बनातीं और कहतीं ‘ये लो दुल्हन बालों में लगा लो’।” वो कभी-कभी उन फूलों से कनफूल बनाकर मेरे कानों में भी पहना देती थीं।

अब्बा मुझे साथ-साथ ले चलते हुए उँगली का इशारा कर कहते, “यहाँ ऊमर लगा था, यहाँ अनार और यहाँ बादाम।” हालाँकि मेरे लिए यह सब तसव्वुर करना मुश्किल था। मेरे सामने मौजूद थे एक नीम और दो बबूल के पेड़, जो अब्बा को बेहद अज़ीज़ थे। अब्बा राहचलते लोगों की फ़िक्र किए बग़ैर पेड़ के तने से लिपटकर उन्हें गले लगाते। अपना माथा उन पेड़ों पर टिकाए रखते। मुझे लगता जैसे वो खुद पेड़ों के जबरन गले पड़ रहे हों।

अब्बा पेड़ों से लिपटे हुए कहते, “मेरे पास मेरी मरहूम अम्माजी के हाथ की ये दो ही

निशानियाँ हैं। एक तुम्हारी अम्मी और दूसरे ये बबूल-नीम के पेड़...। सारे पेड़ कट जाने के बाद इस बची हुई ज़मीन पर अम्माजी ने खुद उगाए थे ये।” यह बात बताते हुए वे अक्सर गहरी और ठण्डी साँस लेते। अब्बा और अम्मी के लिए इस जगह से रुखसत हो चुके सारे पेड़ों की यादें हैं ये तीन पेड़। मेरे लिए ये सिर्फ बबूल और नीम हैं।

इस छोटे-से मोहल्ले में नीम का केवल एक यही पेड़ है जिसकी छाँव में आते-जाते राहगीर ज़रा देर सुस्ता लेते हैं। खास तौर पर पीर यानी सोमवार के दिन जो कि साप्ताहिक बाज़ार का दिन होता है। इस दिन आसपास के गाँवों के लोग इस कस्बे में खरीददारी करने आते हैं। उनके लिए अब्बा एक छोटी मटकी (जिसको वो ठिलिया कहते हैं) को भरकर राहगीरों के लिए रख देते।

सब लोग भी उन पेड़ों को प्यार करते थे शायद...। मैंने देखा है कि अक्सर उनके नीचे बैठकर हवा ले रहे लोग बड़ी हसरत से चेहरा ऊपर करके उनकी टहनियों को ताकते थे। गर्मी के दिनों में नीम के फिरकनी जैसे छोटे-छोटे फूल झूमते हुए प्यार-से लोगों पे बरस जाते थे। और शाम के वक्त सारी ज़मादार औरतें झाड़ू करके वहीं झुण्ड बनाकर बैठ जातीं और न जाने क्या-क्या बातें करतीं।

नीम के इस पेड़ के साथ बाकी दो बबूल भी खड़े थे उस खुले सहन (आँगन) वाले घर में। इस सहन का कोई दरवाज़ा या कोई बाउण्ड्री नहीं थी। सहन और सड़क एक-दूसरे से सटे हुए थे। हर बार बारिश के खतम होते ही पास के गाँव से एक बुजुर्ग आते और बबूल की बड़ी-बड़ी सभी टहनियों को



उस हिस्से  
में वही नीम  
का पेड़ खड़ा  
था जो अब्बा  
के लिए  
उनकी मरहूम  
अम्माजी की  
निशानी था।  
जिसने ज़मीन  
का वो हिस्सा  
खरीदा था,  
उसने कुछ  
सालों तक  
वहाँ कुछ नहीं  
बनाया था।  
अब्बा जब  
भी शहर से  
गाँव जाते तो  
उन तीनों पेड़ों  
से वैसे ही  
लिपटते। यहाँ  
शहर में अम्मी  
को आवाज़  
देते हुए जब  
चाहे कहते,  
“मेरी अम्माजी  
की दुल्हन  
यहाँ आना  
ज़रा।”

काट-काटकर सहन के पीछे की तरफ बागड़ लगा जाते। जब वह बागड़ लगती तो कुछ दिन वह बिल्कुल हरी दीवार जैसी दिखती। फिर 15-20 दिन में ही बबूल की सोंफ जैसी बारीक-बारीक पत्तियाँ सूखकर ज़मीन पे झड़ जातीं। बबूल की बागड़ उस खुले सहन को एक आड़ दे देती। उसके कुछ दिनों बाद बबूल की पतली-मोटी शाखाएँ सूखकर स्याह हो जातीं।

जब घर में लकड़ी लाने के पैसे नहीं होते, तब मैं उन टहनियों को चूल्हे में जलाने के लिए बागड़ से तोड़कर जमा करने लगती। और उन टहनियों में लगे सफेद रंग के बड़े-बड़े काँटों को ध्यान-से चुन-चुनकर तोड़कर अलग कर देती। ताकि अम्मी को खाना पकाते हुए लकड़ियाँ छूने में काँटे नहीं चुभें। मुझे हमेशा ही ये बबूल के पेड़ ज़्यादा काम के लगते थे।

बहुत जल्द ही अम्मी-अब्बा का वह घर छोड़कर हम पास ही के शहर में रहने आ गए। मैंने सुना है कि अब्बा बचपन से ही कभी शहर तो कभी गाँव में रहते आए थे। उनके साथ अम्मी भी दर-ब-दर होती रही थीं। कुछ सालों बाद अब्बा ने गाँव के उस घर का एक हिस्सा बेच दिया। उस हिस्से में वही नीम का पेड़ खड़ा था जो अब्बा के लिए उनकी मरहूम अम्माजी की निशानी था। जिसने ज़मीन का वो हिस्सा खरीदा था, उसने कुछ सालों तक वहाँ कुछ नहीं बनाया था। अब्बा जब भी शहर से गाँव जाते तो उन तीनों पेड़ों से वैसे ही लिपटते। यहाँ शहर में अम्मी को आवाज़ देते हुए जब चाहे कहते, “मेरी अम्माजी की दुल्हन यहाँ आना ज़रा।”



एक शाम अब्बा ने अम्मी से कहा, “सुबह जल्दी हम गाँव के लिए निकलेंगे। सुना है वह अपनी बेची हुई ज़मीन पे तामीर करवा (भवन बना) रहा है।” अम्मी ने कहा, “करवाने दो।”

“अब उसमें हमारा क्या है?” अब्बा के मुँह से निकला, “वो हमारा पेड़ काट देगा।”

अम्मी खामोश हो गई। अब्बा-अम्मी देर रात तक पेड़ों की बातें करते रहे। ज़मीन वापस लेने के बारे में बात करते रहे। आखिरकार अगली सुबह अब्बा ने पहुँचकर पेड़ को देखा। अम्मी ने बताया वो फिर आखिरी दफा पेड़ के गले लगे।

अम्मी और अब्बा हमेशा के लिए नीम के पेड़ को अलविदा कहकर लौट आए। बाकी बचे बबूल के दो पेड़ अब भी अँग्रेज़ी के ‘वाय’ अक्षर की तरह खड़े हैं। अब उन दोनों पेड़ों में हरी पत्तियाँ नहीं आती हैं। अम्मी अन्दाज़े-से कहती हैं, “किसी ने उनकी जड़ों में सूखने की कोई दवाई रख दी है शायद।” अब्बा सुनकर खामोश रह जाते हैं। जैसे वो जानते हैं कि वे दोनों, क्यों अब हरियाते नहीं हैं।





महाराष्ट्र के पुणे के पास एक गाँव है सुपा। 14 मई 1875 की बात है। उस दिन सुपा गाँव में हाट लगा था। आसपास के कई गाँव के लोग वहाँ आए थे खरीद-फरोख्त करने। उस गाँव में कई साहूकारों के घर थे, जहाँ किसानों का आना-जाना था। किसान उधार लेने, बकाया चुकाने या सामान बेचने के लिए साहूकारों के पास जाते थे। साहूकारों के पास सबके हिसाब-किताब थे, सबके लिखे उधारी के कागज़ात भी थे।

पता नहीं उस दिन क्या बात हुई। एक साहूकार के घर में हल्ला हुआ और लोगों ने गुस्से में उस घर को आग लगा दी। बड़ा हड़कम्प मचा। और फिर देखते-देखते गाँव के सारे साहूकारों के घरों में घुसकर उनके बहीखाते, हिसाब-किताब, दस्तावेज़ बाहर लाए गए और उन्हें बीच सड़क पर जला दिया गया। ये कागज़ ही तो किसानों को सताने के काम करते थे। अधिकांश साहूकारों के घर भी जला दिए गए।

ऐसी छुटपुट घटनाएँ तो पहले भी होती रही थीं, पर अब बात कुछ और थी। चौबीस घण्टों के अन्दर यह खबर आग की तरह फैल गई और कई गाँवों में इसी तरह की घटनाएँ हुईं। अगले कुछ हफ्तों में पुणे ज़िले के कम से कम 45 गाँवों में और पास के अहमदनगर ज़िले के 22 गाँवों में ऐसी वारदातें हुईं। मई के अन्त तक आसपास की कई तहसीलों में ऐसी घटनाएँ होने लगीं। लेकिन कहीं पर भी किसी पर जानलेवा हमला नहीं हुआ। यहाँ तक कि किसी गाँव में जब एक साहूकार का घर जलाया जा रहा था, तो साहूकार कमरे में फँस गया और निकल न पाया। तब घर जलाने वाले आन्दोलनकारी जलते घर में

घुसकर उसे बचाकर बाहर ले आए। बस साहूकारों के बहीखाते और कागज़ात पर ही किसानों की नज़र थी।

हाट बाज़ार के दिन जब कई गाँव के लोग इकट्ठा होते तो भीड़ वहाँ के साहूकार के घर को घेर लेती। उससे कागज़ात माँगती। अगर वह सारे कागज़ात उन्हें सौंप देता तो कोई और बात नहीं होती। मगर न दे तो मारपीट की धमकी दी जाती। फिर भी न माने तो घर जला दिया जाता। वारदातों को रोकने के लिए सरकार ने भरपूर प्रयास किया, मगर कामयाब नहीं हुए। किसानों को पुलिस के आने-जाने की खबर थी। पुलिस के गाँव में पहुँचने से पहले ही वे लोग भाग लेते थे। फिर भी सैकड़ों लोगों की गिरफ्तारी हुई। उन पर केस चला और कई लोगों को जेल की सज़ा भी हुई।

ज़्यादातर हमले गुजराती या मारवाड़ी साहूकारों पर ही हुए थे। वे बाहर से आकर महाराष्ट्र के गाँवों में अपना कारोबार कर रहे थे। हमलावरों में शामिल लोग केवल किसान ही नहीं थे। गाँव के कारीगर और अन्य कामकाजी लोग भी इसमें शामिल थे। सभी को साहूकारों से नफरत थी। वे उनके वर्चस्व को खतम करना चाहते थे।

गाँव दर गाँव ग्राम पंचायतों में यह प्रस्ताव पारित हुआ कि इन साहूकारों का सामाजिक रूप से बहिष्कार किया जाएगा। अगर कोई कारीगर, पण्डित या ग्राम सेवक उनकी मदद करता है तो गाँव में उन्हें प्राप्त पुश्तैनी अधिकार खतम कर दिए जाएंगे। जो किसान साहूकारों का समर्थन करेंगे, उनके परिवार से बाकी लोग शादी का रिश्ता नहीं करेंगे और न ही उन्हें सामाजिक भोज में न्यौता देंगे।



## क्यों कर रहे थे किसान ऐसा?

आखिर क्या समस्या थी कि किसान जो पहले साहूकारों से पारम्परिक सम्बन्ध रखते थे, अब उनके खिलाफ हो चले थे। इसे समझने के लिए हमें 1840 से 1875 के बीच के ग्रामीण समाज की समस्याओं पर गौर करना होगा। कुछ ही साल पहले महाराष्ट्र पर अंग्रेजों का शासन स्थापित हुआ था। वे किसानों से अधिक से अधिक लगान वसूल करना चाहते थे। वे यह भी चाहते थे कि किसान कपास जैसी फसल उगाएँ ताकि इंग्लैंड की कपड़ा मिलों को कच्चा माल सस्ते दामों में मिले। किसानों पर दबाव था कि वे साहूकारों से उधार लें और कपास उगाएँ। और उसे बाज़ार में बेचकर सरकार का लगान चुकाएँ व साहूकार को सूद भी दें। साहूकार आम तौर पर किसानों से गिरवी पत्र लिखवाते थे कि अगर किसान उधार न चुका पाए तो उसकी ज़मीन-जायदाद पर साहूकार का अधिकार होगा। बाज़ार के भाव के उतार-चढ़ाव और लगान की दर अधिक होने के कारण किसान अक्सर साहूकार का कर्जा नहीं चुका पाते थे या किश्त नहीं जमा कर पाते थे। तब साहूकार कोर्ट में जाकर कागज़ात दिखाकर किसान की ज़मीन की नीलामी करवा लेते थे।



चित्र 1. साहूकार।

इससे परेशान किसानों की एक अर्जी पढ़ो—

इस सरकार के तहत हमारा घर-ज़मीन बिक रही है। इसके कारण हम भुखमरी का शिकार बन रहे हैं, ठीक उसी तरह जैसे कोई पेड़ जड़ से उखाड़ने से मर जाता है। हम न सर्राफ हैं, न व्यापारी और हम कोर्ट-कचहरियों के नियम-कानून नहीं जानते। जिन वकीलों को हम लड़ने के लिए रखते हैं वे हमसे पैसे छीनते रहते हैं और जब केस हार जाते हैं तो अपील करने का सुझाव देते हैं... हम आपसे आग्रह करते हैं कि इन मामलों को पंचायतों में तय होना चाहिए जहाँ हर तरफदार के दावे और देयक को दोनों के हालात को देखते हुए पुरानी रीत के अनुसार तय किया जाता है।



चित्र 2. महाराष्ट्र के किसानों का एक समूह।

यह अपील थी महाराष्ट्र के ठाणे ज़िले के सात हजार से अधिक किसानों की, अँग्रेज़ सरकार के नाम। इसे लिखा गया था सन 1840 में। उनको लग रहा था कि इस नई सरकार को यहाँ के रीति-रिवाज़ और निर्णय लेने के तरीके नहीं पता हैं। वे उधारी और सम्पत्ति के मामलों को निपटाने के लिए अपने नए तौर-तरीके हम पर लाद रहे हैं।

यह कोई बगावत नहीं थी, एक अपील थी।

हमने पिछले अंक में देखा था कि विजयनगर राज्य की स्थापना के बाद तमिलनाडु के किसान और कारीगर भी कुछ इसी तरह की समस्या का सामना कर रहे थे। और उन्होंने समस्त जातियों की पंचायत को बुलाकर मामले का निपटारा करने का प्रयास किया था। मगर अँग्रेज़ सरकार इन बातों को समझ नहीं पाई। उसे तो लग रहा था कि अगर किसी ने उधार के पैसे नहीं लौटाए तो सरकार का

काम है कि उसकी सम्पत्ति को नीलाम करके उधार देने वाले को दे। लेकिन मामला इतना आसान न था।

अँग्रेज़ सरकार लगातार किसानों से लिए जाने वाले लगान की दर को बढ़ा रही थी। इसे चुकाने के लिए किसानों को साहूकारों से उधार लेना पड़ रहा था। किसान अपना उधार चुका नहीं पा रहे थे और साहूकार सरकारी कचहरियों में जाकर किसानों की ज़मीन की नीलामी करवाकर उसे खुद खरीद रहे थे। किसानों को दिख रहा था कि सरकार और साहूकारों के बीच साँठ-गाँठ है। तो सरकार किसानों की बात क्यों सुने।

ऐसे में ही 1875 में दक्कन के किसानों का यह विद्रोह हुआ था। इसके बाद सरकार ने कई जाँच समितियाँ बिठाईं, नीलामी की नीतियों में बदलाव हुआ और साहूकारों पर कुछ तो लगाम कसी गई।





क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों

अक्षिता, पाँचवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, ग्राम पाड़ा, करनाल, हरयाणा

मुझे लगता है कि बड़ों की बात माननी चाहिए क्योंकि वो हमें सब कुछ देते हैं। वो हमारी इच्छाओं को पूरा करते हैं। हमें भी उनकी इच्छा पूरी करनी चाहिए। और उन्हें हमारी बात इसलिए माननी चाहिए क्योंकि हमारा भी मन कुछ करने या लेने का करता है। जैसे कि हमारा मन जलेबी खाने का है, तो उन्हें हमें वो दिलानी चाहिए।

अंकित कुमार, पाँचवीं, पोखरामा फाउंडेशन अकेडमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

मुझे ऐसा ज़रूरी नहीं लगता। मुझे लगता है कि कुछ हद तक उनकी बातें माननी चाहिए। क्योंकि वो हमसे बड़े हैं तो हमारा भला ही सोचेंगे। मैं नहीं चाहता कि मेरी बातें भी बिना सवाल किए मानी जाएँ क्योंकि मुझे लगता है कि जहाँ पर मैं गलत हूँ वहाँ पर सवाल पूछे जाएँ।

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

कहते हैं कि बड़ों की बात माननी चाहिए, वो भी अक्सर बिना सवाल किए। क्या तुम्हें भी ऐसा ज़रूरी लगता है, क्यों? और क्या तुम चाहोगे कि तुम्हारी बात भी लोग बिना सवाल किए मानें? और क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक के लिए सवाल है:

जानवरों के मल इतने अलग-अलग आकार व आकृतियों के क्यों होते हैं?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें [merapanna.chakmak@eklavya.in](mailto:merapanna.chakmak@eklavya.in) पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर वॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

**चकमक**

एकलव्य फाउंडेशन,  
जमनालाल बजाज परिसर,  
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,  
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश



चित्र: लक्ष्मी, पाँचवीं, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों

हाँ यह ठीक है कि हमें बड़ों की बातें माननी चाहिए। पर कभी-कभी बड़े हम पर अपनी मर्ज़ी थोपते हैं। हमें अपने मन की नहीं करने देते हैं तो हमें दुख होता है। पर ये भी सही है कि उन्हें हमारे भविष्य की चिन्ता होती है। बड़े जो कुछ भी बोलते हैं सोच-समझकर बोलते हैं। जब हम कुछ अच्छा करते हैं तो हमारे बड़ों को खुशी होती है और कुछ गलत करते हैं तो उन्हें दुख होता है। इसलिए हमें उनकी बात बिना सवाल किए मानना चाहिए। हमें ऐसा लगता है कि वो भी हमारी बात मानें। और हम सही राह पर चलें तो वे हमारी बात बिना सवाल किए भी मानने लगेंगे।

लक्ष्मी बेलवाल, आठवीं, आरोही बाल संसार,  
ग्राम प्यूड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

आदित्य ओस्तवाल, पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

मुझे लगता है कि बड़ों की बात माननी चाहिए मगर बिना सवाल किए नहीं। अगर मैं बड़ों की बातों को बिना सवाल किए मानूँगी तो मैं एक कठपुतली बन जाऊँगी। मुझे अपने विचारों को दूसरों को बताने का मौका ही नहीं मिलेगा। और दूसरे लोग मुझसे अपनी सारे बातें मनवा लेंगे।

हमें बड़ों की बात माननी चाहिए क्योंकि वो हमारा भला-बुरा समझते हैं। किन्तु हमें उनसे सवाल भी पूछने चाहिए। क्योंकि उनके द्वारा हमें ज्ञान और तर्क मिलता है। मैं नहीं चाहूँगा कि मेरी बात बिना सवाल के मानें क्योंकि इससे सही और गलत का तर्क नहीं होगा।

विहान सिंह, दसवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल इंटरनेशनल सेक्टर, गुरुग्राम, हरयाणा

जब हम छोटे होते हैं, तो हमें कई चीज़ें पता नहीं होतीं। ऐसे में बड़ों की सलाह हमारी मदद करती है। वे हमें भविष्य की समस्याओं के लिए तैयार करते हैं। लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जब बड़ों की सलाह हमें नहीं मिलेगी। इसलिए बिना सवाल किए उनकी बातें मान लेना ठीक नहीं है। अगर हम बिना पूछे उनकी सलाह मानेंगे, तो हम खुद को नुकसान पहुँचा सकते हैं। बड़े लोग सोच-समझकर निर्णय लेते हैं, जो अक्सर अच्छे होते हैं। लेकिन हमें उनके निर्णयों के पीछे की सोच को समझना चाहिए। इसके लिए हमें उनसे सवाल पूछने होंगे। जब हम सवाल पूछेंगे, तो वे अपने अनुभव हमारे साथ साझा करेंगे और इससे हमारी सोच और समझ विकसित होगी। इससे हमें भविष्य में बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलेगी और हम दूसरों की भी मदद कर सकेंगे। यह हमें आत्मनिर्भर और कुशल बनाएगा। इसलिए मुझे लगता है कि हमें बिना सवाल किए बड़ों की बातें माननी नहीं चाहिए।



हिताक्षी, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी,  
बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

सुमइया, निरन्तर संस्था, पेस, दिल्ली

हमको बड़ों की बात माननी चाहिए क्योंकि हम उनकी बात नहीं मानेंगे तो वह हमारी शिकायत टीचर से कर देंगे। यदि हम उनसे पूछते हैं कि हम यह काम क्यों करें? तो वह हमारी पिटाई भी लगा देते हैं और बोलते हैं कि “बड़ों से सवाल नहीं करने चाहिए। बड़ों की बात चुपचाप माननी चाहिए।” मैं चाहती हूँ कि बड़े भी हमारी बात मानें क्योंकि हम उनकी बात भी तो चुपचाप मान ही रहे हैं ना।

वेदनारायण यादव, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक  
शाला, कानाकोट, बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़

हाँ हमारी बात बिना सवाल किए लोग मानें। इसलिए मानें कि हमारे स्कूल में मीटिंग में आएँ। और हमारे बैग, कॉपी-पुस्तक लेने जाएँ। हमारी ज़रूरत में पैसा दें। हमें पढ़ना-लिखना सिखाएँ और हम बोलें तो नशा बन्द कर दें। और हमारे कहने में घरवाले जैसे दादा-दादी को पैसे दें।

तलब, दूसरी, अपना तालीम घर, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

हमें बड़ों की बात नहीं माननी चाहिए क्योंकि वो हमें खेलने नहीं देते। अपने घर के बाहर से भगाते हैं। और रोज़ पढ़ने को कहते हैं।

अगर हमारे बड़े हमसे किसी के घर आने-जाने से मना करते हैं तो हमें उनकी बात माननी चाहिए। अगर पढ़ाई के मामले में हमारे माँ-बाप हमें रोकते-टोकते हैं तो वहाँ पर हमें अपनी बात रखनी चाहिए और सवाल पूछने चाहिए। और हमें थोड़ी ज़िद भी करनी चाहिए क्योंकि जब तक हम बोलेंगे नहीं वो हमें दबाते रहेंगे। कई बार माँ बोलती हैं कि तुम्हें शादी में वही कपड़े पहनने होंगे जो हम बोलेंगे। लेकिन हम उस समय उनकी बात नहीं सुनते हैं। हम कहते हैं कम से कम रोज़ ना पहनें तो एक दिन के लिए शादी में तो हमें अपनी पसन्द के कपड़े पहनने दो। तब वो कहते हैं, “हाँ, ठीक है। पहन लो।”

आदित्य, चौथी, प्राथमिक विद्यालय, लाडवी, खरगोन, मध्य प्रदेश

हमें बड़ों की बात माननी चाहिए क्योंकि वह जो भी बोलते हैं हमारे भले के लिए बोलते हैं। जैसे कि अगर मैं रोटी खा रहा हूँ और टीवी भी देख रहा हूँ तो मेरे दादाजी बोलते हैं कि खाना खाते वक्त टीवी नहीं देखना चाहिए। आँखें खराब हो जाएँगी। मुझे लगता है दादाजी सही बोलते हैं। एक बार मैंने मम्मी से बोला कि मम्मी मुझे अनगिनत पैसे चाहिए। तो मम्मी ने बोला कि बेटा अनगिनत पैसे तो बहुत होते हैं। तुम इतने पैसों का क्या करोगे? तो मैंने मम्मी से बोला कि जैसे मैं आपकी बात को बिना सवाल के मानता हूँ, आपको भी मेरी बात बिना सवाल के मान लेनी चाहिए। पर फिर मुझे लगा कि मम्मी सही बोल रही हैं। लेकिन फिर भी कभी-कभी सवाल भी करना चाहिए।

सखरी काटकर, छठवीं, कमला नलुकर बाल भवन,  
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

परलधल चौबे, पाँचवीं, नरुदल वैली इंटरनेशनल स्कूल,  
नरुदलपुरम, मध्य प्रदेश

हाँ, कभी-कभी ऐसा लगता है क्यलंकल जब हम बड़लं की बात नहीं मानते तब वो गुस्सा हो जाते हैं। तब वो बोलते हैं बड़लं को आदरयुक्त बोलना चाहलए। पर हर बार हम ही क्यलं आदर करें। बड़लं को भी आदर करना चाहलए। जब हम धीरे आवाज़ में बोलते हैं तब हमारे माँ और पापा तेज़ आवाज़ में बोलते हैं। ऐसा क्यलं? जब हम कुछ कहते हैं तो बड़े कहते हैं, “नहीं तुम झूठ बोल रही हो, तुम्हें कुछ पता नहीं, तुम पागल हो।” ऐसा क्यलं? हमें भी सन्धल मललनी चाहलए बोलने की। बड़े लोग कहते हैं, “ज़्यादा फोन मत देखना, ज़्यादा टीवी मत देखना।” पर जब बड़े टीवी देखते हैं, फोन ज़्यादा देर तक देखते हैं, तब? जब हम बाहर का खाना खाते हैं तो वे कहते हैं, “बाहर का खाना नहीं चाहलए। तुम बीमार हो सकते हो।” लेकिन जब बड़े लोग बाहर का खाना खाते हैं, तब?

मोहित, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल,  
धमतरी, छत्तीसगढ़

में ऐसा नहीं मानता। क्यलंकल एक बार बात मान लो तो बार-बार बात मनवाते हैं। कमीशन मललता है तो मान लेता हूँ। बड़े मेरी बात मानें ऐसा नहीं हो सकता। क्यलंकल में उनकी बात नहीं मानता हूँ तो वो क्यलं मानेंगे।

हमारे बड़े कभी भी हमारे बारे में कोई गलत बात नहीं कर सकते हैं। यदल वो ऐसा करते भी हैं तो हमें सबसे पहले उसे समझना होगा। साथ ही उसे नहीं मानने का कारण उन्हें समझाना होगा। कुछ बातें ऐसी होती हैं जलन्हें हम मानना नहीं चाहते हैं परन्तु नहीं मानने का उद्देश्य हम उन्हें समझा नहीं पाते। अगर हम कारण नहीं बता पाते हैं तो हमारे बीच वलवाद की स्थलतल बन जाती है। और फिर छोटलं को बड़लं की नाराज़गी सहन करनी पड़ती है। आजकल लोग अपने हलसाब से चलते हैं फिर भी हमें जहाँ लगता है कल लोग हमारी बात मानें, हम उन्हें वहाँ अपनी सलाह देते हैं। लेकिन बलना सवाल कलए लोग हमारी बात नहीं मानते।

वृन्दा मेहरा, पाँचवीं, रणथम्बोर, शलव नाडर स्कूल,  
नोएडा, उत्तर प्रदेश

हमें बड़लं की बात अवश्य माननी चाहलए लेकिन यदल कोई मतभेद हो तो वलनम्रता से सवाल पूछना चाहलए। और अपने वलचार आगे रखना चाहलए। जैसे मेरे अधिक आग्रह करने पर भी मुझे घर में पालतू कुत्ता रखने की अनुमतल नहीं मलली। तब मेरे सवाल करने पर मुझे सही कारण पता चला और मैं मान गई।





हमारा जवाब

# सभी पत्तियाँ एक जैसी...?

किशोर पंवार

चित्र: कनक शशि

पिछली बार “क्यों-क्यों” में हमने तुमसे पूछा था कि सभी पत्तियाँ एक जैसी क्यों नहीं होतीं। तुम सबने तरह-तरह के जवाब भेजे। यहाँ पेश है इस सवाल के लिए हमारा जवाब।

सवाल बड़ा रोचक है और तुम्हारे जवाब भी। कुछ तो मुझे बड़े अच्छे लगे। जैसे कि परमेश्वरी का यह जवाब – “चिड़ियों को अपना घोंसला खोजने में परेशानी होती यदि सभी पत्तियाँ एक जैसी होतीं तो।” आयुष रावत का जवाब “कॉपी-पेस्ट नॉट अवेलेबल” भी बड़ा मजेदार है।

यह वाकई में सोचने वाली बात है कि आखिर हमारे आसपास पाई जाने वाली पत्तियों में इतनी विभिन्नता क्यों है। हमारे आसपास जितने अन्तर पत्तियों में दिखते हैं, उतने फूलों और फलों में नहीं दिखते। यहाँ अँग्रेज़ी के ‘सी’ अक्षर जैसी पत्तियाँ हैं, तो कुछ चपटी और कुछ गोल हैं। कुछ तिकोनी, कुछ दिल के आकृति की, कुछ तीर की आकृति की तो कुछ बड़ी परात जैसी पत्तियाँ भी हैं। पत्तियाँ पौधों का सबसे खास हिस्सा हैं। यहीं भोजन भी बनता है। पत्तियाँ ही पानी, धूप, बारिश, बर्फ, गाय-बकरी द्वारा चराई जैसे दबावों को झेलती हैं। ये एक कारण है कि हमें पत्तियाँ सबसे ज़्यादा रंग-रूप और आकृतियों में नज़र आती हैं।

## जैसा पर्यावरण वैसा रूप

देखा गया है कि नम एवं छायादार स्थान पर उगने वाले पौधों की पत्तियाँ पतली बड़ी-बड़ी और पंखनुमा होती हैं, जैसे फर्न की। वहीं तेज़ धूप व पर्याप्त वर्षा वाले स्थानों पर उगने वाले पौधों की पत्तियाँ मोटी, कड़क और एक समान होती हैं। यानी कि वे कटी-फटी नहीं होती, जैसे कि बरगद, पीपल, आम, सागौन, साल आदि की।

जहाँ धूप तो तेज़ हो, पर पानी की कमी हो वहाँ के पौधों की पत्तियाँ बहुत ही छोटी या काँटों के रूप में होती हैं। जैसे कि रेगिस्तानी पौधों में बबूल, शमी, कैपरिस और नागफनी इसके उदाहरण हैं। यानी कुल मिलाकर जैसा पर्यावरण वैसी पत्तियाँ। तुम्हारे भेजे जवाबों में से लक्ष्मी ने अपने जवाब में वास स्थान की बात की है। वृन्दा और स्पन्दिता ने भी अपने जवाबों में पर्यावरण की भूमिका की ओर इशारा किया है।

## कैसे तय होता है पत्तियों का रूप-रंग?

किस पौधे की पत्तियाँ कैसी होंगी यह तय होता है पौधों में पाए जाने वाले आनुवांशिक गुण से। यह गुण हर पौधों के लिए निश्चित

होते हैं। यह आनुवांशिक गुण पौधों की प्रत्येक कोशिका में उनके केन्द्रकों में पाए जाते हैं। उनमें पाए जाने वाले गुणसूत्र (chromosome) पर लक्षणों को तय करने वाले जीन (gene) मिलते हैं। यानी जैसा जीन, वैसा रंग-रूप और आकृति।

परन्तु जीनों पर भी पर्यावरण का असर होता है और उम्र का भी। टिकोमा के पौधे को ही देख लो। पीले फूल वाली इस झाड़ी में नीचे की पत्तियाँ सरल प्रकार की होती हैं, तो ऊपर की पत्तियाँ संयुक्त होती हैं। उनमें तीन से पाँच तक पत्रक (leaflet) पाए जाते हैं। इसी तरह लाल पट्टा में नीचे-नीचे की पत्तियाँ हरी होती हैं, जबकि ठण्ड के दिनों में फूल आने के समय इसकी ऊपरी पत्तियाँ एकदम चटक लाल-गुलाबी हो जाती हैं। इन पत्तियों में आनुवंशिक गुण तो वही रहता है, परन्तु इनका पर्यावरण बदल गया। और उम्र भी इन पत्तियों का रूप-रंग बदल देती है।

पौधों को मिलने वाला प्रकाश भी पत्तियों की आकृतियों को प्रभावित करता है। जैसे कि पानी के अन्दर उगने वाले पौधे। बाण पत्र (Sagittaria) में पानी के अन्दर रहने वाली पत्तियाँ रिबन जैसी पतली और चपटी होती हैं। पर जैसे ही यह पौधा पानी के ऊपर आ जाता है तो इसकी पत्तियाँ मोटी, कड़क और भाले की आकृति की हो जाती हैं। इसका मतलब है कि पौधों में आनुवांशिक तौर पर दोनों प्रकार की पत्तियाँ बनाने के गुण यानी कि जीन मौजूद हैं। पर कब जाकर, कैसी पत्ती बनेगी यह पर्यावरण और प्रकाश पर निर्भर करता है। कम प्रकाश तो रिबन जैसी पत्तियाँ, ज़्यादा प्रकाश तो मोटी, कड़क बाण जैसी पत्तियाँ।

तो कुल मिलाकर पत्तियों का आकार-प्रकार, रूप-रंग उनके पर्यावरण, रचना और कार्य तथा आनुवांशिकता के आपसी तालमेल से तय होता है। इस बारे में और अधिक जानना चाहो तो एकलव्य प्रकाशन की पत्रिका सन्दर्भ के 39वें अंक में प्रकाशित लेख 'पत्तियों का आकार, आकृति एवं रंग' पढ़ सकते हो।

नवम्बर-दिसम्बर विशेषांक के लिए क्यों-क्यों का सवाल है:

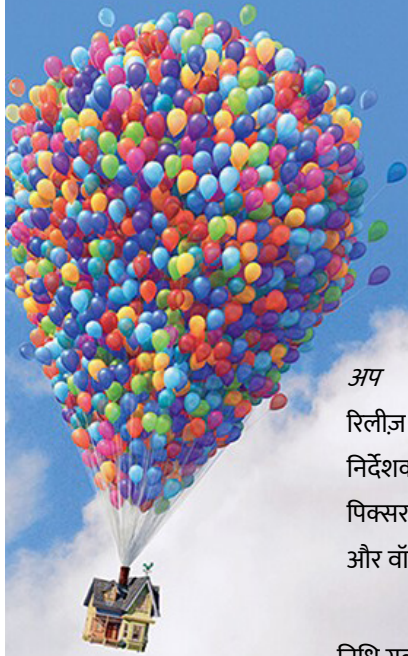
कुछ ऐसी जगहें होती हैं जहाँ हम सुरक्षित महसूस करते हैं, जहाँ हमें किसी भी किस्म के शोषण का सामना नहीं करना पड़ता। कोई हमें परेशान नहीं करता — ना हमारे रंग-रूप को लेकर, ना कपड़ों की स्टाइल को लेकर और ना ही हमारे विचारों को लेकर। तुम्हारे लिए ऐसी जगह कौन-सी है, और क्यों

अपने जवाब हमें 5 अक्टूबर तक  
merapanna.chakmak@eklavya.in  
या 9753011077 पर भेज देना।





Disney • PIXAR



अप

रिलीज सन: 2009

निर्देशक: पीट डॉक्टर (Pete Docter)

पिक्सर एनिमेशन स्टूडियोज़ द्वारा निर्मित

और वॉल्ट डिज़्नी पिक्चर्स

निधि गुलाटी

हीलियम गैस से भरे गुब्बारों से खेला होगा तुमने। हीलियम गैस हवा से हल्की होती है तो उससे भरे गुब्बारे ऊँचे उड़ते हैं। तुमने पकड़े होंगे जब तो लगा होगा कि तुम्हारा हाथ ऊपर को खींच रहे हैं। कभी उसमें एक छोटी पर्ची बाँधकर देखना या माचिस की खाली डिबिया, ऊपर उड़ती है क्या? अगर ऐसे 20,000 से ज़्यादा गुब्बारे हों तो क्या वे पूरे घर को ऊपर उड़ा सकते हैं? हाँ, अगर घर लकड़ी से बना हो। विदेशों में, खासकर अमरीका में, घर अक्सर लकड़ी से बने होते हैं। यह घर सीमेंट से बने घरों से हल्के होते हैं। ज़रा सोचो तो, ऐसा क्यों है?

## फिल्म चर्चा

इस बार जिस फिल्म की चर्चा हम कर रहे हैं, वो है अप। इस फिल्म का मुख्य किरदार कार्ल हज़ारों हीलियम गुब्बारों की मदद से अपने घर को उड़ाकर उत्तर अमरीका से दक्षिण अमरीका ले जाता है। यह फिल्म एक डॉक्युमेंट्री फिल्म से शुरू होती है। कार्ल खोजकर्ता चार्ल्स मन्तज पर बनी एक डॉक्युमेंट्री देख उससे प्रभावित होता है। मन्तज एक अद्भुत चिड़िया की खोज करता है, जिसे वैज्ञानिक खारिज कर देते हैं, झूठा करार देते हैं। अगले 70 साल वह उस चिड़िया को 'पैराडाइज़ फॉल्स' (Paradise Falls) में दुनिया से दूर रहकर अकेले खोजता रहता है। यह खोज उसे गुस्सैल और कठोर बना देती है।

मन्तज की फिल्म देखकर कार्ल दक्षिण अमरीका जाकर पैराडाइज़ फॉल्स ढूँढना चाहता है। उसकी दोस्त और बीवी एली भी यही चाहती है। इसके लिए काफी बार वे दोनों गुल्लक में पैसे जोड़ते हैं, पर रोज़मर्रा की ज़रूरतों में वो पैसे खर्च हो जाते हैं। 60 साल बाद जब पैसे जुड़ जाते हैं तो एली बीमार हो जाती है और पैराडाइज़ फॉल्स का उनका सपना पूरा नहीं होता। इन पूरे 70 सालों की कहानी हमें शुरू के 9 मिनटों में समझ आ जाती है। इन 9 मिनटों में हमें कार्ल और एली की पूरी ज़िन्दगी दिखाई गई है और फिल्म का यह हिस्सा काफी महत्वपूर्ण है। आओ, समझने की कोशिश करते हैं कि ऐसा क्यों किया गया।

### कला या तकनीक?

यह कैसे पता चलता है कि कला का कोई रूप महज़ तकनीक है या सचमुच में कला है? कोई भी चीज़— चाहे वह पेंटिंग हो, लेखन हो, चित्र हो, फिल्म हों—कला कहलाएगी यदि उसमें भावनाएँ जगा पाने की क्षमता है। वरना वो तकनीक कहलाएगी। फिल्म देखनेवालों की भावनाएँ फिल्म के रूप (form) से जुड़ी हैं। कला में कुछ ऐसी चीज़ें

शामिल कर दी जाती हैं जिन्हें हम अपनी ज़िन्दगी से जोड़ पाते हैं। कुछ ऐसी छवियाँ जो हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में घटती हैं, जब हम इन्हें फिल्म में देखते हैं तो ये सीन हमारे दिल को छू लेते हैं। जैसे कि एक सीन में एली शीशा साफ करती दिखती हैं या घर में पेंटिंग करती नज़र आती हैं। कार्ल उन्हें ऐसा करते देख रहे हैं। हम सब भी तो अपने घर में ऐसा कुछ ना कुछ करते रहते हैं ना। फिल्म में ऐसे सीन हमसे जुड़ाव बनाने के लिए डाले गए हैं, जिससे हमें लगे कि एली भी हमारे जैसी ही है।

इसे और समझने के लिए कार्ल और एली की पूरी ज़िन्दगी बयां करने वाले नौ मिनटों में दिखाए गए

दृश्यों की शृंखला पर गौर करते हैं। इन दृश्यों में कोई भी बातचीत नहीं है, फिर भी यह 9 मिनट दर्शकों को आसानी-से रुला देते हैं, उनके चेहरे पर मुस्कुराहट ले आते हैं। यह कैसे हो पाता है? ये सारे दृश्य संजोने में 'मिस-एन-सीन' की सम्पादन तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। मिस-एन-सीन मतलब वे सीन जिनमें सब कुछ सोचा-समझा है – सोफा, रोशनी, किरदार, रंग। यानी कि दृश्य में जो भी है, वह यँही नहीं है। उसे पिराया गया है। उसे बहुत सोच-समझकर किसी इरादे से वहाँ संजोया गया है। इनमें आकृतियाँ, कुछ छवियों का बार-बार दोहराया जाना और संगीत भी शामिल है, जिनके माध्यम से कहानी बयां की गई है।





## बार-बार आने वाली छवियाँ

कार्ल और एली की ज़िन्दगी की इस 9 मिनट की कहानी को दोबारा देखना। पहाड़ी पर चढ़ना ऐसी एक छवि है जो दो बार फिल्म में आती है। इन छवियों में सममिति या सन्तुलन नहीं है। चित्रों की बनावट (composition) को देखो। आयत को काटता हुआ एक विकर्ण (diagonal)। फ्रेम के ऊपरी दाएँ हिस्से में एक बड़ा-सा पेड़ एक ऊँची पहाड़ी के ऊपर और दाएँ हिस्से में एक कस्बा, जो अपनी आकृति से पहचान में आ रहा है। एली और कार्ल चित्र के बीचोंबीच हैं। पहली छवि में एली सीधी खड़ी हैं, कार्ल धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ रहे हैं। इस फ्रेम में एली मुख्य हैं, वे अपने हाथों को कमर पर रखकर कार्ल का इन्तज़ार कर रही हैं जो अभी भी आधे रास्ते में ही है।

वहीं दूसरे फ्रेम में शाम है। कार्ल पहाड़ पर चढ़ तो गए हैं लेकिन उनकी कमर झुकी है। एली धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ रही हैं। पहली वाली एली से कितनी अलग। पहले फ्रेम में आकर्षक रंग हैं, चटक और सुन्दर। दूसरे फ्रेम में गहरा नारंगी रंग है, आसमान में धुँधलापन है। इस चित्र में कॉन्ट्रास्ट (contrast) अधिक है, परछाइयाँ गहरी हैं। दिन रात की तरफ बढ़ रहा है और एली भी अपने अन्त की

तरफ। अब वे छवि के बीचोंबीच छा नहीं रहीं। दोनों तस्वीरों में एली और कार्ल एक-दूसरे की तरफ देख रहे हैं, ना कि पहाड़ की चोटी या कस्बे की तरफ। लेकिन एक और बात है दूसरे फ्रेम में। कार्ल एली की तरफ हाथ बढ़ा रहे हैं। ऐसा करना उनके बीच प्यार का प्रतीक है। इस बनावट में दोनों किरदारों की बदलती स्थितियाँ कितनी खूबसूरती से बयां की जा रही हैं। यह बात सहजता से हमारे सामने आती है कि एली ने उम्र के साथ अपनी ताकत खो दी है। तुम इस लम्बे शॉट (long shot) के बारे में और सोचना। यहाँ इसका इस्तेमाल क्यों किया गया?

एक और छवि है जो फिल्म में दो बार आती है। कार्ल का घर उड़ रहा है और वह आराम से अपने सोफे पर बैठा है। तभी घण्टी बजती है। वह चौंक जाता है। उड़ते हुए घर में कौन आया भई? सामने रसेल है, 10-12 साल का एक लड़का। फिल्म में उस समय कार्ल नहीं चाहते रसेल से बात करना या उसे अन्दर बुलाना। फिल्म के अन्त से कुछ पहले के दृश्य में कार्ल का घर उड़ रहा है और घण्टी बजती है। इस बार वह चाहते हैं कि रसेल हो, लेकिन घण्टी डग (डग उनके दुश्मन मन्तज का कुत्ता है, जो रसेल और कार्ल की तरफ हो लेता है।)



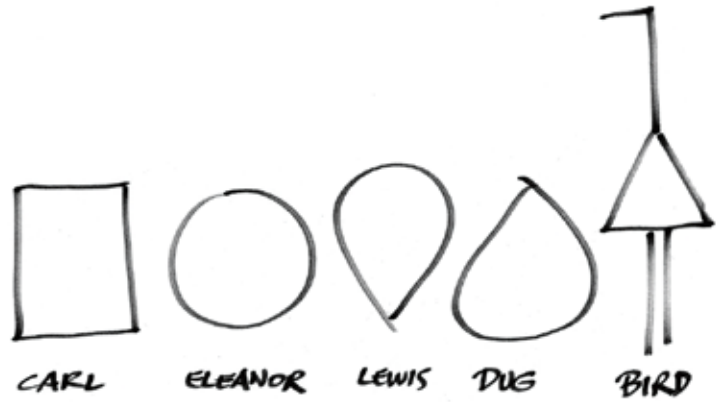
ने बजाई होती है। इस तरह बार-बार दृश्य या छवियाँ दोहराकर बदलती स्थितियों, किरदारों की बदलती भावनाओं को दर्शाया गया है।

## आकृतियों की भाषा

अब बात करते हैं आकृतियों की। *अप* में सिम्प्लेक्सिटी (simplicity) दिखती है। यह एक दृष्टिकोण है पेचीदा चीज़ों को सरलता से समझने-बूझने का और पेचीदा सवालों के सरल, स्पष्ट उत्तर, समाधान या निर्णय तक पहुँचने का। फिल्म के किरदार साधारण नहीं हैं, पेचीदा हैं।

अब फिल्म की तस्वीरों को ध्यान-से देखो। चरित्र के डिज़ाइन में आकृति कितनी ज़रूरी है। *अप* में सिम्प्लेक्सिटी का इस्तेमाल हुआ है। यानी कि किसी छवि को उसके सबसे सरल रूप में लाकर, फिर एक-एक करके उसमें जटिलता जोड़ी गई है। हर आकृति का अपना एक अलग मायना है। हर आकृति एक प्रतीक की तरह काम करती है, खासकर डिज़ाइन में। जैसे कि चौकोर को दृढ़ता से जोड़ा जाता है, जबकि वृत्त को खुलेपन से। यह बुनियादी आकृतियाँ *अप* में कार्ल और एली के चरित्रों के डिज़ाइन में साफ दिखती हैं। यह फिल्म के सेट और प्रॉप्स में भी नज़र आती हैं।

फिल्म बनाते समय फिल्म के निर्माता और ऐनिमेटर दोनों ने तय किया कि किरदार सरल होंगे। कार्ल की आकृति एक चौकोर जैसी है। वह बीते हुए कल में बँधा है। वह बदलना नहीं चाहता। अपने तरीकों में खुश है, ज़िद्दी है। उसके चेहरे, चश्मे, उँगलियों और जोड़ों की चौकोर आकृति उसकी कठोरता को दिखाती है।



रसेल और एली की आकृति गोल है, जो उनके चरित्रों के एक विशेष पहलू को दर्शाती है। वे दोनों आगे की सोचते हैं। रसेल का चेहरा उल्टे अण्डे-सा है, जो उसकी मासूमियत दिखाता है। उसमें अभी भी दुनिया को लेकर उम्मीद है। फिल्म के खलनायक तिकोने हैं। कार्ल की तस्वीरें चौकोर फ्रेम में होती हैं, जबकि कार्ल और एली दोनों की तस्वीरें चौकोर फ्रेम में एक अण्डे जैसी आकृति की मैट के साथ होती हैं।

इन आकृतियों के उपयोग से एक नई भाषा मिलती है तस्वीरों को। प्रतीकों की भाषा। है ना, ये मज़ेदार बात। इस फिल्म के बारे में अभी और भी बहुत-सी बातें करनी हैं तुमसे। आने वाले अंकों का इन्तज़ार करना।





# अरशद की कचौड़ियाँ

सुशील शुक्ल

चित्र: प्रिया कुरियन

फूले गुलाब फूले गेंदे रातरानियाँ  
फूले चमेली फूलों की सुन लीं कहानियाँ  
अरशद की कचौड़ियों को अगर देख ले कोई  
खिले फूलों के चेहरों पे उतर आएँ झाड़ियाँ  
जो फूले हैं कचौड़ियाँ उसकी कड़ाही में  
बख़्शो हुनर कि कह सकूँ कुछ तो इलाही में  
माथे पे पसीनों की कतारें हैं झूलतीं  
फूलने से पहले पूरी ये मेहनत वसूलतीं  
डूबे हैं ज़रा देर को फिर तैर आए हैं  
भूले खड़े हैं लोग करने सैर आए हैं  
कुछ तो खड़े हैं जेब में पैसे टटोलते  
कुछ खाली जेब भी इधर-उधर हैं डोलते  
कुछ कहते हैं अरशद को अस्सलाम वालेकुम  
अरशद की आँखें बोले हैं फिर आ गए हो तुम  
हींग और मसालों को पता अपना काम है  
बस वो ही बच सके हैं कि जिसको जुकाम है  
कड़ाही पे जा टिकी हैं सब आँखों की जोड़ियाँ  
दोना हो हाथ में और उसमें दो कचौड़ियाँ  
मटके के दही में किसी सारस की चहक है  
चटनी में देसी धनियाँ पुदीने की महक है  
अरशद किसी से पूछे हैं दही डलवाएँगे  
न मियाँ! पहले तो चार सूखी खाएँगे  
एक बात कहें सच तुम्हें अपना जान के  
ले पाओ तो लो ज़ायके सारे जहान के  
सुबह तो पहले खाओ अरशद की कचौड़ी  
और फिर मज़े उठाओ बनारस के पान के



मक







# बरस रहा है...

शशि सबलोक  
चित्र: प्रोडिति रॉय

अभी-अभी सुबह हुई है। चम्पा पर चढ़ी मधुमालती ने उसे ढाँप लिया है। सुर्ख-गुलाबी-सफेद फूलों की छतरी में कहीं-कहीं चम्पा की नोंके दिख रही हैं। बारिश देखने का मन सबके पास है। चौथी मंज़िल की बालकनी में चाय पीते लोग मधुमालती को देख रहे हैं। धुले-खिले फूल सिर झुकाए हैं। बालकनी से झाँकती बच्ची सड़क पर बहते पानी को देख रही है। चम्पा के फूल चम्पा के नीचे गिरे हैं। कुछ पानी के साथ बह रहे हैं। वो चौथी मंज़िल से दिख नहीं रहे हैं। हर सुबह की तरह आज भी दो-चार नीबू ज़मीन पर गिरे हैं। मॉर्निंग ग्लोरी के बैंगनी फूल आसमान में सूरज तलाशने और, और ऊँचा हो रहे हैं। बेल जहाँ-तहाँ रस्ता बना रही है। नीचे वो पान की बेल को लपेटे जा रही है। पान

बनती कोशिश अपने होने को बचाए है। बेल का ऊपरी सिरा छत की रेलिंग पर लिपटा आगे बढ़ा जा रहा है। हरी पत्तियों के बीच अचानक एक हरी मिर्च नज़र आई। अरे! ये कब आई... इतनी सारी। एलोवेरा फैल-फूल रहा है। वो स्थाई है। ज़रा-से में जी लेता है। फिर इन दिनों तो बहुत पानी है। भीतर-बाहर। एलोवेरा के घने के पीछे से सफेद-सा कुछ झलका है। झुककर, कुछ टेढ़े हो देखा तो रजनीगन्धा ने धप्पा कर दिया।

कुन्द के सफेद तारे-फूल बगीचे की जाली पर फैले हैं। बेल दिन-रात बढ़ रही है। तारे छिटकते जा रहे हैं। सड़क पर लोग सिर झुकाए चल रहे हैं। कीचड़-गड़्डों से बचते। तारा-फूलों को खेल सूझता है। महक से लदी हवा, बूँदों से बचती-बचाती उन तक पहुँचती है। खुशबू तलाशती आँखों को हवा में महक नहीं दिखती। उसका रस्ता सुँघाई देता है। उठी आँखें फूलों पर डोलती हैं। टिकती नहीं। न पाँव टिकते हैं। फूल उनकी आँखों में अपना अक्स देख खुश हैं।

कुत्ते कारों के नीचे दुबके हैं। बारिश की टपक से तो बच गए, बहते पानी से कैसे बचें। गेट खुलते ही भागे आते हैं। उनके शरीर गन्धा रहे हैं। दूध लेने, कचरा फेंकने निकले लोग हट-हट करके भगा रहे हैं। घरों के बाहर गायों-कुत्तों के खाने के लिए रखे कुण्डों में पानी भर गया है। छोड़ी हुई गाएँ बन्द गेटों को देख सिर झुकाए हैं। कई आँखें रात भर बरसते पानी को देखती रही हैं।

रुकी बारिश फिर बरसने लगी है। पत्ती-पत्ती झुक गई है।

गमले में खिला  
रजनीगन्धा  
गए साल का



स्कूल की छुट्टी हो गई है। बच्चे खिड़कियों से हाथ निकाले बैठे हैं। अपने खुले हाथों पर बूँदों के गिरते ही उन्हें फिर उछाल रहे हैं। उनकी खिलखिलाहट सीलन भरी हवा से गुज़रती घर भर में फैल रही है। वो रोटी बेलती हुई बारिश सुन रही है। बीती बारिशों उसे भिगो रही हैं। वो बेलती है। तवे पर डालती है। उसे पलटकर गैस पर फुलाती है। चिमटे से अलट-पलटकर उतार लेती है। बीच-बीच में दूसरी गैस पर निगाह डालती है। कढ़ाई में भजिए खदबदा रहे हैं। वो गैस धीमी कर झारे से उन्हें हिलाती है। घर में कई गन्धें फैल रही हैं। उसकी साँसों में पिछली बारिशों की गन्ध है। वो साँस रोक लेती है। चकला-बेलन धोकर स्टैण्ड पर रखती है। खिड़की बन्द कर देती है। भजियों को प्लेट पर सजाकर घरवालों को आवाज़ देती है। गैस पर अब चाय चढ़ा दी है। उबलते पानी से निकलकर अदरक की खुशबू फैल रही है।

कच्चे घरों की टीन की छतों पर मोमजामे बिछे हैं। ईंटे उन्हें रोके हुए हैं। बारिश को हर मोमजामे के हर छेद का पता है। उस रस्ते वो घरों में आ रही है। घरों में हर सामान ने पन्नियाँ ओढ़ी हैं। फर्श गीला है। गली का पानी कीचड़ समेत अन्दर आया हुआ है। मक्खियाँ, मच्छर भी साथ-साथ आए हैं। चौखट पर घुड़ी-मुड़ी होकर दो कुत्ते बैठे हैं। गाएँ कुछ हटकर

बैठी हैं। पूँछ से बार-बार मक्खियाँ उड़ाती हैं। मक्खियाँ लौट-लौटकर वहीं आ जाती हैं।

एक सूखे कोने में दीदी खाना बना रही हैं। चारपाई पर कोने में बैठा कृष्णा बुखार में तप रहा है। उसकी लाल आँखें बह रही हैं। मोटी चादर ओढ़े वो टीवी देख रहा है। वहाँ बाढ़ है। लोग घुटने-घुटने पायंचे चढ़ाए अन्दाज़े-से पाँव बढ़ाते चले जा रहे हैं। किसी के सिर पर सामान है। किसी के कन्धों पर बैठे बच्चे। बच्चे सहमे हुए इस सैलाब को देख रहे हैं। यही वो पानी है जिसमें वो छप-छप करते थे। यही वो पानी है जिसे लाने वो घण्टों लाइन में लगे रहते थे।

बरसात में झुकी  
हर एक पत्ती  
सजदे में

अखबारों में हर जगह सेल के विज्ञापन हैं। 50, 60 परसेंट सेल। बरसातों में बचत की चाह बरस रही है। सड़क पर बरसाती ओढ़े सब्जीवाला आवाज़ दे रहा है। वो छतरी पकड़े एक-एक भिण्डी की तोड़कर देखती है। ककोड़े की तरफ बढ़े हाथ रुक जाते हैं। ठेले पर फैली सब्जियों पर नज़र फेरती है। भाव-ताव पूछकर जाने को होती है। सब्जीवाला दो-तीन रुपए कम कर देता है। वो दो-तीन सब्जी लेती है। सब्जीवाला मुट्ठी भरकर हरी मिर्चियाँ ऊपर से देता है। धनिया नहीं देता। तेज़ बिजली चमकती है। चम्पा के नीचे खड़े लोग पिछले साल गिरी बिजलियों को याद कर सहम जाते हैं। सब्जीवाला आगे बढ़ जाता है।

फोन पर लोग अपने-अपने शहर की बारिशों के हाल बता रहे हैं। शहर के लोग



डैम के गेट खुलने की खबरें एक-दूसरे को बता रहे हैं। लोग गाड़ियों के शीशे चढ़ाए सड़कों पर आ गए हैं। जारुल का पता उसके बैंगनी फूल दे रहे हैं। सारे पेड़, हवाएँ धुल गई हैं। पारदर्शी शीशे पर पारदर्शी पानी के पार सब धुंधला गया है। वाइपर लगातार शीशे से पानी सरका रहा है। डैम के भरभराकर निकलते सफेद पानी को देख लोग खुश हैं। भुट्टे खाते हुए फोटो खींच रहे हैं। मोबाइल में गाना बज रहा है — ‘बरसात में हम से मिले तुम सजन, तुम से मिले हम बरसात में...’। भीगे बालों से फिसलता पानी बूँद-बूँद कर भीगी पीठ को भिगो रहा है। इतने हरे, भीगे, खुश शहर को प्रेम से देख रहे हैं। ठहरकर अपने शहर को देखने का यह मौका बारिश ने दिया है।

वो लौट रहे हैं। रास्ते में एक जगह पर कुछ लोग जमा दिखते हैं। उनके हाथों में मोमबत्तियाँ हैं। कुछ ने तख्तियाँ उठाई हुई हैं — वी वॉन्ट जस्टिस। मोमबत्तियों की फड़फड़ाती लौ को हाथ से आड़ देते हैं। लौ हवा में तन जाती है और मुट्ठियाँ आसमान में। लौटते हुए लोग शीशों से सटे उन्हें देखते हुए आगे बढ़ जाते हैं। नम हवा ‘वी वॉन्ट जस्टिस’ को दूर-दूर तक पहुँचा रही है। आगे ट्रैफिक सिग्नल है। लाल बत्ती देख कार रुक जाती है। आज खिड़की के काँच को खड़खड़ानेवाली नहीं है। उम्मीद में उठे हाथ से आँख चुराना तकलीफदेह होता है, यह हर गाड़ीवाला जानता है। इसी से बचने कोई हाथ पर्स में जाता है, कोई जेब में। आज चैन की साँस के साथ सब हरी बत्ती का इन्तज़ार कर रहे हैं।

रात हो गई है। मधुमालती में सफेद फूल चमक रहे हैं। दरवाज़ा खोलते ही चमेली और जूही की गन्ध भीतर घुस आती है। घर का एक हिस्सा महक जाता है। भीतर गीले कपड़ों और सीलन की गन्ध है। इसे काटने वो अगरबत्तियाँ जला देती है। सब अपने-अपने कामों में लग गए हैं।

बारिश तेज़ हो गई है। तेज़ गरज के साथ बिजली चमकती है और बत्ती गुल हो जाती है। हाथ अँधेरे में मोमबत्तियाँ ढूँढने लगते हैं।

## कहानी पूरी करो

इस कहानी की शुरुआत या इसके बाद का हिस्सा लिखकर भेजो। चयनित कहानियाँ नवम्बर-दिसम्बर के विशेषांक में प्रकाशित होंगी।

**“मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।”**

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें मेरी ऐसी क्या ज़रूरत पड़ गई?

“तुम्हारी बन्दूक अब भी तुम्हारे पास है या उसे ठिकाने लगा चुके हो?”

मैंने अचरज से कहा, “हाँ है, लेकिन उसमें जंग लग गई होगी।”

“क्या तुम उसे लेकर कल मेरे घर आ सकते हो?”

मैंने ध्यान-से उनके चेहरे को देखा। वे वाकई गम्भीर थे।

“और हाँ, गोलियाँ भी साथ लेते आना।”

“ज़रूर, लेकिन आपको इसकी क्या ज़रूरत पड़ गई? क्या आपके घर के आसपास जंगली जानवर हैं या चोर-लुटेरों का आतंक है?”

“जब तुम मेरे घर आओगे तो तुम्हें सब कुछ बता दूँगा।”...







इन दो चित्रों में छह से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

ढूँढो अन्तर



चित्र: दिव्या आर्या, आठवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, उत्तराखण्ड



भाग - 5

## मेहमान जो कभी गए ही नहीं

आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,  
दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ  
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर



अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए  
आक्रामक पौधों की सीरिज की अगली कड़ी...

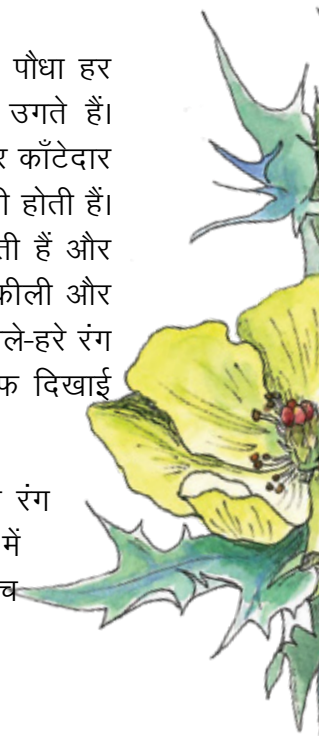
### सत्यानाशी

वैज्ञानिक नाम: *आर्जिमोन मेक्सिकाना*  
(*Argemone mexicana*)

मूल: मैक्सिको और मध्य अमेरिका  
कैसे पहुँचा: स्पष्ट नहीं है कि इसे  
सजावट के लिए जान-बूझकर लाया  
गया या फिर ये अन्य बीजों के साथ  
गलती से आ गया।

डेढ़ मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकने वाला यह पौधा हर साल खतम हो जाता है। फिर इसके नए पौधे उगते हैं। इसका तना सीधा, शाखायुक्त, नीले-हरे रंग का और काँटेदार होता है। इसकी पत्तियाँ लगभग 15 सेंटीमीटर लम्बी होती हैं। आमने-सामने न होकर ये एकान्तर (alternate) होती हैं और तने को ढँक लेती हैं। इसकी पत्तियाँ दाँतेदार, नुकीली और खण्डों में बँटी होती है। तने की तरह पत्तियाँ भी नीले-हरे रंग की होती हैं और उनमें ग्रे-सफेद रंग की नसें साफ दिखाई देती हैं।

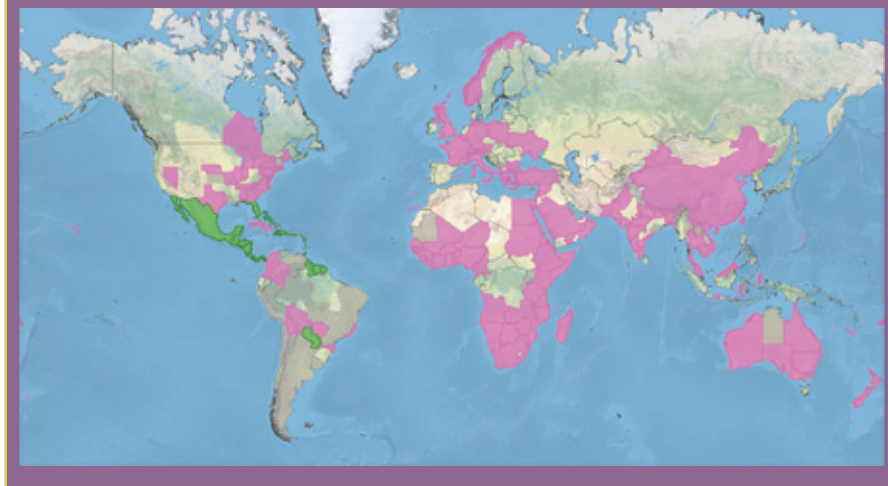
इसके फूल कप के आकार के और चटक पीले रंग के होते हैं। इसके फूल अकेले खिलते हैं (गुच्छों में नहीं)। फूलों में 4-6 पंखुड़ियाँ होती हैं। इनके बीचोंबीच





एक लाल वर्तिकाग्र (stigma) होती है जिसके चारों ओर कई पुंकेसर होते हैं।

सत्यानाशी के फल गोल, काँटेदार कैप्सूल होते हैं जिसके अन्दर इसके बीज होते हैं। बीजों को फैलाने के लिए यह कैप्सूल फूट जाते हैं। इसका पौधा एक साल में तीस हजार तक बीज पैदा कर सकता है। और इसके बीज लम्बे समय तक मिट्टी में रह सकते हैं। इसके फल जानवरों के फर और मवेशियों के खुरों द्वारा फैलते हैं। कभी-कभार इसके बीज पानी के जरिए भी फैल सकते हैं।



प्रवेश



स्वाभाविक



मूल जानकारी नहीं दर्ज

## असर

सत्यानाशी खेती की ज़मीन और चरागाहों में बड़े पैमाने पर पाया जाता है। ये सड़कों के किनारे और खुली बंजर ज़मीन पर भी उगता है। इसे स्तनधारियों, पक्षियों और इन्सानों के लिए ज़हरीला बताया जाता है। चारे के रूप में इसके बीजों को खा लेने से मवेशियों को पाचन और श्वसन से जुड़ी समस्याएँ हो सकती हैं। इन्सानों में इसे एडिमा महामारी से जोड़कर देखा जाता है। इसके बीज आकार और रंग में काली सरसों के बीजों के समान होते हैं। यदि इन्सान आर्जिमोन का तेल मिले हुए सरसों के तेल का सेवन कर लें, तो उन्हें एडिमा हो सकता है।

## बन्दोबस्त

काँटों के कारण सत्यानाशी पौधों को हाथ से उखाड़ना मुश्किल होता है। मशीन से जुताई करना व खेती करना ज़्यादा कारगर होता है। कुछ देशों में छोटे पौधों को हटाने के लिए ग्लाइफोसेट और 2, 4-डी जैसे रसायनों का उपयोग किया जाता है।





6	+		=	14
+		+		+
	+	9	=	
=		=		=
	+	17	=	30

1. खाली जगहों में से कौन-सी संख्याएँ आएँगी?

2. एक छोटी-सी छतरी के नीचे 5 लोग खड़े हैं। फिर भी उनमें से कोई भी नहीं भीगा। ऐसा कैसे हो सकता है?

3.



कौन-सी छतरी ऊपर दी गई छतरी से मेल खाती है?

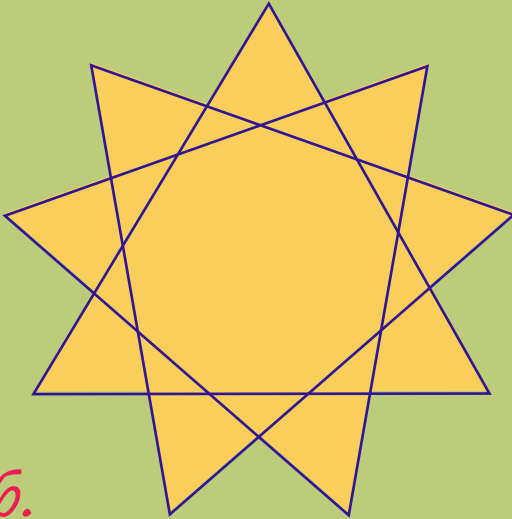


4.

3 चींटियाँ एक साथ जा रही थीं। आगे वाली चींटी बोली, “मेरे पीछे 2 चींटी हैं।” पीछे वाली चींटी बोली, “मेरे आगे 2 चींटी हैं।” पर बीच वाली चींटी बोली, “मेरे आगे भी 2 चींटी हैं और पीछे भी 2 चींटी हैं।” यह कैसे हो सकता है?

5.

इस चित्र में कितने त्रिभुज हैं?



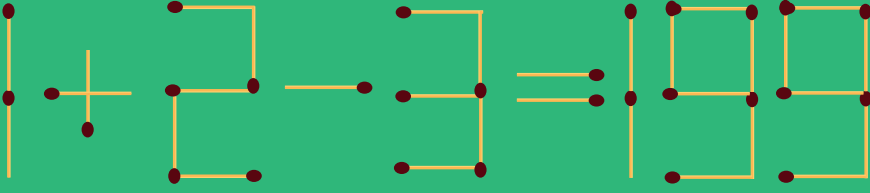
6.

दी गई ग्रिड में स्कूल में काम आने वाली कई सारी चीजों के नाम छिपे हैं। तुमने कितने ढूँढ़े?

पै	स्ले	ट	दा	गों	मे	सा	टि	कु
चाँ	सि	चा	र्ट	द	ब्लै	ज़	फि	सी
दा	स्के	ल	कि	चाँ	क	पै	न	कि
काँ	ब	ड	र	ला	बो	रे	बाँ	कशा
पी	पी	स्ट	ब	मा	ई	त	क्स	स्टे
क	ट	र	ड	र्क	घ	कं	ल	प
नी	कि	स्टे	ला	र	ण्टी	प्यू	पा	ल
ग्लो	ता	मो	के	ल्कु	ले	ट	र	र
ला	ब	स्ता	प	र	का	र	ति	दा

7.

सिर्फ एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को ठीक करना है। कैसे करोगे?



8.

कौन-से रिंग को खोलने से सारे रिंग अलग-अलग हो जाएँगे?



9.

दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग रंग की छतरी आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी छतरी आएगी?



# माथा पच्ची

## फटाफट बताओ

पुरुषों और महिलाओं को समान पुरस्कार राशि देने वाला पहला प्रमुख खेल आयोजन कौन-सा है?

1. बीडब्ल्यूएफ विश्व चैम्पियनशिप
2. यूएस ओपन
3. ऑस्ट्रेलिया ओपन
4. एनबीए विश्व चैम्पियनशिप

(नर्गद म्प्रु.ऽ)

खाली पेट तुम कितने केले खा सकते हो?

प्राङ्मृ ङाङ् कर्मृ क्रीङ् कृङ् केङ्गि)  
(प्राङ्गि ङिङ् ङिङ्ग ङङ्गि)

इनमें से किस फल का बीज उसके बाहर की ओर होता है?

1. स्ट्राबेरी
2. सीताफल
3. अनार
4. आम

(ङिङ्गिङ्ग.ऱ)

शुरू कटे तो कान कहलाऊँ,  
बीच कटे तो मन बन जाऊँ

(नकम)

क्या है जो उलटा करने से कम हो जाता है?

(ए ङङ्गिङ्ग)





# बारिस की बात

सीमा

चित्र: वसुन्धरा अरोड़ा

बचपन में हमें स्कूल जाबे को बड़ो शौक हतो। सब बच्चा स्कूल न जाबे के लाबे रोट हते और एक हम हते कि स्कूल जाबे के लाने तड़पत रहत ते। एक दिना बड़ी जोर की बारिस हो रई ती। तब हम तीसरी क्लास में पढ़त हते। हमआई छोटी बहन भी हमारे साथ पढ़त हती। बा पहली क्लास में हती।

हमारे पापा हम दोऊ बहनन को साइकिल पे बिठाके स्कूल छोड़वे जात हते। पापा बाये आगे बिठात ते और हमें पीछे करियर पर। उनने हमें आगे बिठावे की बहुतई कोशिश करी पर जब भी बे हमें आगे बिठात ते हम इत्ती कसके हैंडल पकड़ लेत ते कि पापा के लाबे साइकिल चलाबो मुशिकल हो जात तो। एक दिना तो हमआई जा हरकत से हम तीनों



गिरत-गिरत बचे। बस ऊ दिना से पापा ने हमें फिर कबहुँ आगे बिठाबे की कोशिश नई करी और जाके मारे हमें आज तक साइकिल में आगे बैठबो नहीं आओ। और अब तो साइकिल भी ऐसी नई आत कि ऊ में चलाबे वाले के अलावा कोई और बैठ सके।

खैर, साइकिल को किस्सा फिर कभी। अभी बारिस की बात। तो का भओ ऊ दिना हम स्कूल जाबे के लाबे तैयार भये ही थे कि बड़ी जोर की बारिस होन लगी। कछु देर तो हमने इन्तजार करो कि शायद बारिस रुक जाए पर बा तो और तेज गिरन लगी। पापा बोले, “आज सुबह सेई तेज बारिस गिर रई है तो स्कूल जाबे से कोई फायदा नई है कायसे स्कूल में तो पानी भरा गओ होगो। ऐसो करो, अब तुम तैयार तो होई गई हो तो आज घरई में पढ़ लेओ।”

छोटी बहन की तो जैसे मन की हो गई कायसे बाये तो स्कूल जाबे अच्छो नहीं लगत तो। पर हम अपने मन को कैसे मनाते जो स्कूल जाबे के लाबे बिलबिला रओ तो। कररी हिम्मत करके हमने अपने पापा से कई कि हमें स्कूल छोड़ आबें। उनने कई, “मोड़ी तुमाओ दिमाग खराब हो गओ का, दिखात नईया किती जोर की बारिस हो रई हैगी। देख बाहरे कित्तो पानी भरा गओ, का जामे तैर के स्कूल जायेगी।”

हमऊ भी जोश-जोश में बोल गए, “अब बारिस को मौसम है तो बारिस तो होगी ही, तो का पूरे चौमासे स्कूल नहीं जायेंगे।” “15 अगस्त के लड्डुआ बंट रये का वहां पे, के तुमाये बिना झण्डा नहीं


फहरेगा जो स्कूल जाबे के लाने मरी जा रई मोड़ी। जा नईया कि छोटी बहन की तरह चुपचाप घरई में पढ़ लो।” मम्मी से भी चुप नई बैठो जा रओ थो तो वो भी बोल पड़ी, “चलो हमाये साथ आज किचिन में थोड़ो काम-धाम कराय लो, एक दिना नई पढ़ोगी तो दुनिया झां कि भां नई हो जाबेगी।”

पर हम का मानबे वाले हते। जैसई बारिस की कसर कम भई, हमने पीठ पे बस्ता लादो और पैदल ही स्कूल के लाबे निकल पड़े। थोड़ई दूर पहुंचे हते कि का देखो पापा पीछे से साइकिल पे चले आ रये थे। जरूर छोटी बहन ने चुगली कर दई होगी। खुद तो स्कूल जाबे में नानी मर रई ती, अब हमाए पीछे बाप को भेज दओ।

पापा रस्ता में ही चालू हो गए, “हमेशा अपने मन की करत हो, हमाये बोलबे पे भी जूं तक नई रेंगी तुमाये।” हमऊ मनई मन बोलन लगे, “पहले तो हमें स्कूल आबे से रोक रये ते, अब खुद भीगत हुए पीछे-पीछे आ गए। का जरूरत हती आबे की? इनको भी घर में मन थोड़ी लग रओ होगो? कायसे बारिस की वजह से कोई बोलबे-बताबे के लाबे मोहल्ला में मिल नहीं रहो होगो, तो साइकिल लेके हमाये पीछे निकल पड़े।”

“का बड़बड़ा रई मोड़ी, चल साइकिल पे बैठ जा। मैं भी तो देखूं ऐसे में कौन-सा स्कूल खुलो है भला?” “हमें नहीं बैठने साइकिल पे, पहले तो सबुह-सुबह लेक्चर सुना दओ और अब लाड़ दिखा रये।” “ज्यादा नखरे न दिखा, चुपचाप बैठ जा।” चलत रस्ता में ही पापा के हाथों





परसाद न मिल जाए जा डर के मारे  
हम साइकिल पे बैठ गये।

स्कूल पहुंचे तो देखो सब सूनो-  
सपाट। एक भी जना स्कूल में नहीं  
दिखाई दे रहो तो सिवाय प्रिंसिपल  
मेम के। वैसे तो वे हमें बहुत लाड़  
करत हतीं लेकिन हमें भीगत हुए आत  
देख वो सोई हम पर बरस पड़ीं। हमें  
तो लग रओ तो कि इत्ती बारिस में भी  
स्कूल को नांगा न करबे पर प्रिंसिपल  
मेम हमें खुश होके रोज स्कूल आबे  
को तमगा देंगी और सब जन के  
सामने हमाई बढ़ाई करेंगी। पर यहां  
तो पांसा ही उलटा पड़ गया। बढ़ाई  
तो हुई नई डांट अलग से पिला दी।

अब घर वापस जाबे के अलावा और  
कोई चारा भी तो नई तो हमाये पास।  
अपना छोटा-सा मुंह लेके पापा की  
साइकिल के करियर पे बैठके हम  
वापस घर को निकल पड़े।

पर हमने का देखो कि पापा ने  
साइकिल घर की तरफ न मोड़के  
चच्चा हलवाई की गली में ले लई।  
“चल अब मुंह मत बना, गरमागरम  
इमरती तल रही है, जा ले लो।” हमाए  
पापा देखन में जरूर कररे लगत ते  
पर मन के एकदम मोम हते।

हम बाप-बिटिया ने जी भरके  
गरमागरम इमरती खाई और कुछ  
मम्मी और छोटी बहन के लिए भी पैक  
करबा लई।

# पापकॉर्न की खोज कैसे हुई?

वैसे तो भोजन से जुड़े इन रहस्यों को  
सुलझाना बड़ा मुश्किल होता है। क्योंकि  
पुरातत्ववेत्ताओं (archeologists) के लिए  
अतीत में झाँकने की एकमात्र खिड़की  
अतीत में छूटे हुए अवशेष होते हैं, खासकर  
तब जब लोगों ने चीजें लिखकर दर्ज नहीं  
की हों। सबूत के तौर पर खुदाई में अक्सर  
मिट्टी के बर्तन या पत्थर के औज़ार जैसी  
कठोर चीजें ही मिलती हैं। नरम चीजों  
— जैसे भोजन के बचे हुए हिस्से — का  
मिलना भी बहुत मुश्किल है। बिरले ही,  
कुछ शुष्क जगहों पर कोई नरम चीज़  
संरक्षित मिल जाती है। या फिर किसी  
जली हुई चीज़ के अवशेष सलामत मिलने  
की सम्भावना रहती है।

सौभाग्य से, मक्के में कुछ कठोर भाग  
होते हैं जैसे कर्नेल खोल। यह कर्नेल या  
दानों का वो हिस्सा है जो भुट्टे या





पॉपकॉर्न खाते वक्त तुम्हारे दाँतों में फँस जाता है। खाने के पहले जब हम इसे भूनते या सेंकते हैं, तो कभी-कभी यह जल भी जाता है। इन सबके छोटे व सख्त हिस्से (फायटोलिथ) हज़ारों सालों तक सलामत रह सकते हैं और पुरातत्विदों को प्रमाण के रूप में मिल जाते हैं।

अब यह तो हम जानते हैं कि मक्का पिछले 9000 साल से हमारी खेती का हिस्सा है। इसकी खेती सबसे पहले वर्तमान के मेक्सिको में शुरू हुई थी। मक्के की कई किस्में हैं और इनमें से ज़्यादातर किस्में गर्म करने पर पॉप हो जाती हैं या फूट जाती हैं। लेकिन इसकी एक किस्म, जिसे वास्तव में 'पॉपकॉर्न' (पॉप मक्का) कहा जाता है, सबसे अच्छे-से पॉपकॉर्न बनाती है। पेरू से 6700 साल पुराने पॉप होने वाले मक्के के फायटोलिथ और जले हुए दानों के अवशेष मिले हैं।

ऐसा अनुमान है कि पॉपिंग मक्के की खोज दुर्घटनावश हुई होगी। खाना पकाते समय कुछ दाने आग में गिर गए होंगे और खाना बनाने वाले ने नए व्यंजन बनाने के इस तरीके पर गौर कर लिया होगा। और फिर, नए व्यंजन के अलावा पॉपकॉर्न बनाकर रखने से मक्के को लम्बे समय तक सहेजने में आसानी होती होगी।

दरअसल आग में तपाकर पानी सुखाने से दानों को जल्दी खराब होने से बचाया जा सकता है। गर्म करके सुखाते वक्त दाने का पानी भाप बनकर निकलता है, यही पॉपकॉर्न को पॉप करता है। तो हो सकता है कि सिनेमा हॉल और ट्रेन में सफर का यह साथी अनाज को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने की कोशिश का परिणाम है।

स्रोत फीचर्ससे साभार





# चित्र पहेली

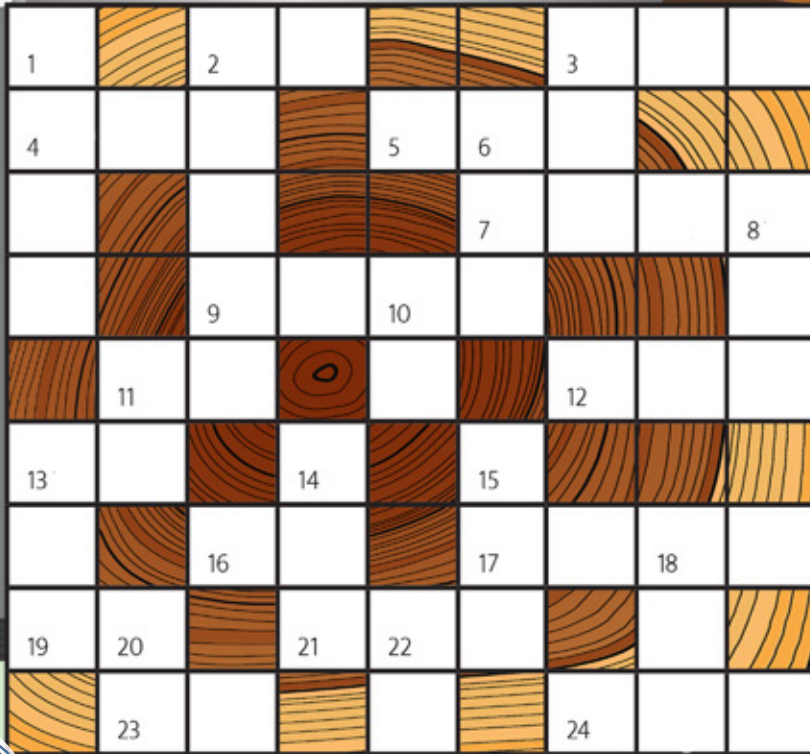
बाएँ से दाएँ →

ऊपर से नीचे ↓

16 →



2 →





4			9		1			
7			4	3	8			1
5	9	1	7	6	2	4	3	
								6
6		5			9		7	3
	1	3	2			9	4	
2		6		9	4	1		7
3	7	9	8	1		6	2	
		4	6	2	7	3		

## सुडोकू 79

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।





## काला बादल

पूजा अहिरवार  
नौवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा  
सागर, मध्य प्रदेश

बादल निकला, बादल निकला  
एक तरह का बादल निकला।  
लगता है वो, पानी वाला  
निकला है वो, काला-काला।  
पानी लेकर कहाँ चले वो  
रुखा-सूखा गाँव मिले जो।  
बादल वहीं रुक जाएँगे  
वर्षा खूब कराएँगे।

दो-तीन दिनों से मौसम बहुत खराब चल रहा है। हवा बहुत चल रही है जिससे फसल गेंहूँ की सो जाती है। फिर हम लोगों को काटने में दिक्कत आती है। और अभी गेंहूँ भी सूख गया है और कटाई भी शुरू हो गई है। तो गेंहूँ काटते हैं तो उखड़ जाते हैं। और पानी भी बहुत गिर रहा है। जिससे फसल खराब हो रही है। और बर्फ भी बहुत गिर रही है दूसरे गाँवों में। इससे फूल रहे आम के फूल झड़ रहे हैं।

चित्र: शान्ति, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश



# मौसम की मार

रेशमी नरें

सातवीं, एकलव्य लर्निंग  
सेंटर, ग्राम मांटीखोह  
केसला, मध्य प्रदेश

चित्र: यश सिंह, छठवीं,  
ग्राम नरेन्द्रपुर, परिवर्तन  
सेंटर, सिवान, बिहार



# जोंकों का मौसम

आरती गोस्वामी

दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी  
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

आपको तो पता ही है कि आजकल बरसात का मौसम आ गया है। पर ये बरसात अपने साथ जोंकों को भी लाई है। जिसे देखकर ज़्यादातर लोग डर जाते हैं। पर मैं नहीं डरती। क्योंकि वह भी तो एक छोटा-सा जानवर है। उससे क्यों डरना है। पर हाँ जब बरसात का मौसम हो तो एक जीव से मुझे बड़ा डर लगता है, वो है मेंढक। क्योंकि जब मेंढक पैर के नीचे आता है तो बहुत गुदगुदी करता है।

चित्र: प्रेमा आर्या, दसवीं, लक्ष्मी आश्रम, कौसानी, अल्मोड़ा, उत्तर प्रदेश





## जंगल जलेबी

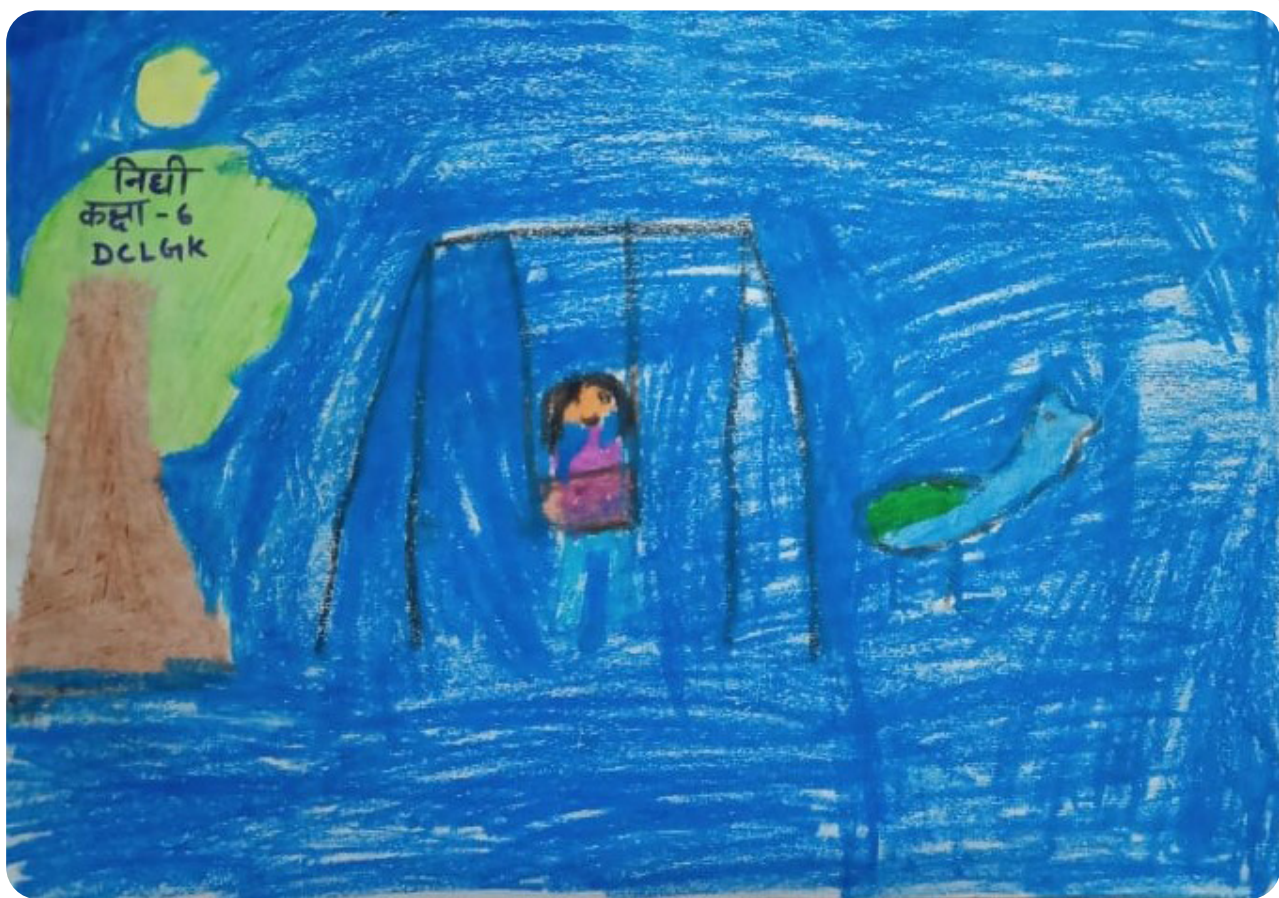
केतकी सोनकर  
आठवीं, कम्पोजिट स्कूल  
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हमारे घर के बगल में जंगल जलेबी का एक पेड़ लगा था। जब उसमें फल आते थे तो हम लोग उसे तोड़कर खाते थे। जंगल जलेबी खाने में खटमिट्ठी लगती थी। मेरे आँगन में उसकी छाँव भी रहती थी। कुछ दिनों बाद हमें पता चला कि जिसका पेड़ है वे इसे कटवाना चाहते हैं। हम लोगों को बहुत दुख हुआ।

जब वो पेड़ कटवाने लगे तो मेरे आँगन में जो डाली थी तो वो गिर गई। वहाँ पर लहसुन लगा था। वो सब दबकर खराब हो गया। हम लोगों ने टूटी डाल में लगे फल तोड़कर खाए और इस बार बीज इकट्ठा कर लिए।



चित्र: ध्रुवी आर्या, नौवीं, आरोही बाल संसार, ग्राम प्यूड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड



चित्र: निधी, छठवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

## बारिश बनी आफत

तरुण चन्द, चौथी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय किल्ल, मूनाकोट,  
पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड



पिछले पाँच दिन से हमारे यहाँ बारिश हो रही है। इसी वजह से मेरी दीवाल गिर गई है। नौले तथा धारों में पानी का स्तर बढ़ गया है। बारिश की वजह से सड़कें बन्द हैं। लोगों को इधर-उधर आने-जाने में परेशानी होती है। पानी भी गन्दा हो जाता है। सब्जियों के दाम भी बढ़ जाते हैं। हमें फल भी मिलता है। सभी स्कूलों में छुट्टियाँ हो जाती हैं। गाय के गोठ में कीचड़-कीचड़ हो जाता है। और लोगों को घर से बाहर निकलने में परेशानी होती है। धोए हुए कपड़े भी नहीं सूखते।

चित्र: ऋषिका देशमुख, पहली, विंध्यवासिनी हायर सैकेंडरी स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



## हमारा मोबाइल खो गया

सदफ फारूकी  
दसवीं, सिमराई चकमक क्लब, बंगरसिया  
भोपाल, मध्य प्रदेश

एक दिन मैं, मेरे पापा और मेरे भाई लोग भोपाल शादी से आ रहे थे। रात के करीब ग्यारह-साढ़े ग्यारह बज रहे थे। हम लोग रास्ते में गाड़ी में थे। मेरे भाई का मोबाइल मेरे हाथ में ही था। मेरी नींद लग गई। और नींद में मोबाइल मेरे हाथ से गिर गया। मुझे पता ही नहीं चला कि मोबाइल गिर गया है।

जब नींद खुली तो मेरे हाथ में मोबाइल नहीं था। हम 11 मील तक आ गए थे। फिर मैंने पापा और भाई को बताया। भाई ने गाड़ी घुमाई और हम लोग मोबाइल ढूँढने लगे। हम पापा के मोबाइल से फोन लगा-लगाकर ढूँढ रहे थे। फोन में घण्टी भी जा रही थी। हम आशिमा मॉल तक पहुँच गए थे, पर मोबाइल नहीं मिला। फिर हम घर लौटने लगे।

हम समरधा तक पहुँच गए थे तो मेरे पापा ने एक बार फोन किया। इस बार कोई भैया ने उठाया और बोले कि आप अपना मोबाइल लेने आशिमा मॉल के पास आ जाओ। हमने फिर गाड़ी घुमाई और आशिमा मॉल के पास पहुँचे। फिर हमने देखा तो कोई नहीं दिखा। फिर पुलिस अंकल से पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्हीं के पास हमारा मोबाइल था।

मोबाइल में कुछ लाइन-लाइन सी आ रही थी और अजीब-सा दिख रहा था। घण्टी की आवाज़ आ रही थी। पुलिस अंकल ने हमारे मोबाइल की सिम अपने फोन में डाली थी। तभी उन्होंने हमारा फोन उठाया। उन्होंने हमारा मोबाइल हमें दे दिया। फिर हम घर आ गए।



## मेरा टॉमी

गया  
तीसरी, आशा ट्रस्ट  
कानपुर उत्तर प्रदेश



जब मैं 5 साल का था तब मेरे घर के पास एक कुत्ता रहता था। वह बहुत सुन्दर और शरारती थी। मैं उसे प्यार-से टॉमी पुकारता था। मैं उसके साथ खेलता और उसके साथ ही खाना खाता था। एक दिन जब मैं खाना खा रहा था तो टॉमी खेलने के लिए बाहर गया। कुछ देर बाद वहाँ चोर आए और टॉमी को पकड़कर ले गए।

चित्र: माहिरीन, चौथी, दीपालया  
सीनियर सैकेंडरी स्कूल,  
गसबेठी, नूह, हरयाणा



1.

6	+	8	=	14
+		+		+
7	+	9	=	16
=		=		=
13	+	17	=	30

2.

क्योंकि बारिश नहीं हो रही थी।

3.

आखिरी वाली।

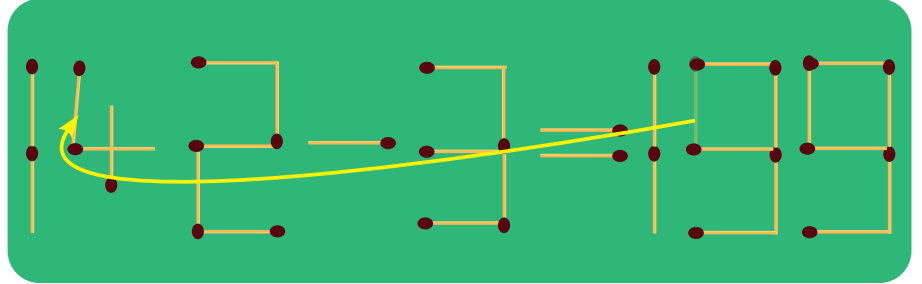
4.

क्योंकि तीनों चींटियाँ गोल घेरे में घूम रही थीं।

5.

30

7.

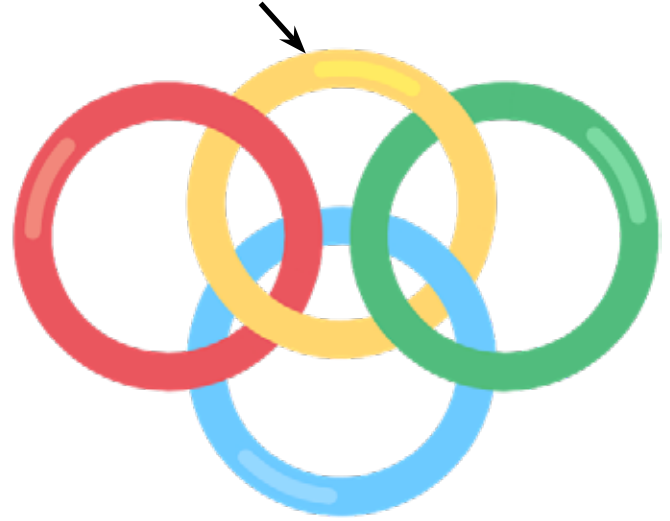


6.

वैं	स्ले	ट	दा	गों	मे	सा	टि	कु
चा	सि	चा	ट	द	ब्लै	ज	फि	सी
दा	स्के	ल	कि	चॉ	क	पै	न	कि
कॉ	ब	ड	र	ला	बो	रे	बॉ	कशा
पी	मी	स्ट	ब	मा	ई	त	क्स	स्टे
क	ट	र	इ	क	घ	कं	ल	प
नी	कि	स्टे	ला	र	ण्टी	प्यू	पा	ल
ग्लो	ता	मो	के	ल्लु	ले	ट	र	र
ला	ब	स्ता	प	र	का	र	ति	दा

8.

पीले रंग वाले रिंग को।



9.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 मै	2 म	कल	3 कु	मह	डा
4 स	मो	स	5 न	6 म	क
7 यो	ल	8 स	9 य	ल	10 पी
11 पी	नी	ज	12 अ	पा	र
13 पा	कु	14 रा	15 मि	16 मि	र
17 ला	ल	18 मि	र	19 नी	20 वू
21 मा	22 पि	स	23 रा	ई	प
24 ब	र	नी			

सुडोकू-79 का जवाब

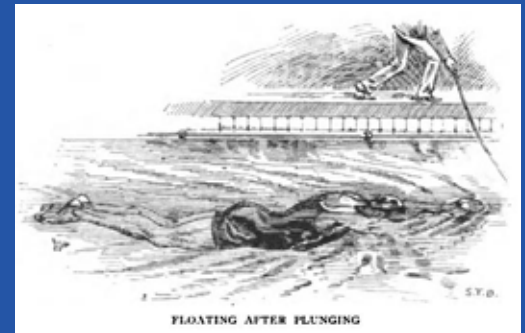
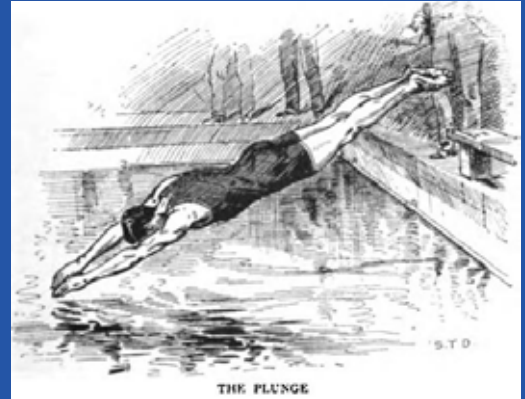
4	3	8	9	5	1	7	6	2
7	6	2	4	3	8	5	9	1
5	9	1	7	6	2	4	3	8
9	2	7	5	4	3	8	1	6
6	4	5	1	8	9	2	7	3
8	1	3	2	7	6	9	4	5
2	8	6	3	9	4	1	5	7
3	7	9	8	1	5	6	2	4
1	5	4	6	2	7	3	8	9

# तुम भी जानो

## दुनिया का सबसे उबाऊ खेल?

‘डिस्टेंस प्लंज’ (कुछ दूरी की छलाँग) एथलैटिक्स की परिभाषा के लिए एक चुनौती था। इसमें शुरुआत में प्रतियोगी को सामान्य रूप से गोता लगाना होता था। इसे ‘प्लंज’ कहते थे। यह गोता डाइविंग बोर्ड के बिना, 46 सेंटीमीटर की ऊँचाई से लगाया जाता था। एक बार पानी में उतर जाने के बाद प्रतियोगी को अपने शरीर को पूरी तरह से स्थिर रखना होता था। वे किसी मांसपेशी को हिला नहीं सकते थे या किसी भी तरह से खुद को आगे नहीं बढ़ा सकते थे।

विजेता या तो वह व्यक्ति होता था जिसने साँस लेने के लिए अपना चेहरा उठाने से पहले सबसे लम्बी दूरी तय की हो, या फिर वो जिसने एक मिनट के भीतर सबसे लम्बी दूरी तय की हो। 1908 में, ओलिम्पिक खेलों की शुरुआत के 4 साल बाद ही इसे प्रतियोगिता से हटा दिया गया! और किसी ने कोई एतराज भी नहीं जताया...।



देर रात बाहर जाकर जेलाटो (इतालवी आइस्क्रीम) खाना इतालवी संस्कृति का एक हिस्सा है। लेकिन चैन की नींद सोना भी उन लोगों को पसन्द है। इसलिए एक नया कानून बनाया गया है। इसके मुताबिक रात के साढ़े बारह बजे के बाद टेकअवे फूड, जिसमें आइस्क्रीम और पिज्जा भी शामिल हैं, की सारी दुकानें बन्द करनी पड़ेंगी। उम्मीद है कि फिर लोग देर रात तक रोड पर घूमते हुए शोर नहीं मचाएँगे और जल्दी अपने-अपने ठिकानों पर पहुँच जाएँगे। इससे शहरवासियों को चैन से सोने का मौका मिलेगा। वीकेंड पर यह नियम डेढ़ बजे के बाद लागू होगा। फिलहाल यह कानून 15 मई से नवम्बर अन्त तक के लिए है।

अब देर रात नहीं  
मिलेगी आइस्क्रीम







चित्र: कनक शशि

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोजारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन